गुरु सेवक परिवार
GSP
SOCIAL HELPING HAND
स्वास्थ्य ★ सहयोग ★ संस्कार

वर्ष : 21 अंक : 7 जुलाई : 2024 मूल्य : 20/-

स्वास्थ्य और संस्कार

कट्टर नहीं - पवित्र बनों

जिन शासन प्रहरी पाँच महाव्रतधारी संत-साध्वी जी म. सा.
के चरणों में सादर कोटिशः वंदन नमन

!! श्री सुदर्शन गुरवे नमः !!

आगमज्ञाता पूज्य गुरुदेव

श्री अरुणचन्द्र जी म.सा.

पूज्य श्री मनीष मुनि जी म., पूज्य श्री अमन मुनि जी म.
पूज्य श्री अतिमुक्त मुनि जी म., पूज्य श्री अनुराग मुनि जी म.
पूज्य श्री अभिषेक मुनि जी म., पूज्य श्री अभिनन्दन मुनि जी म.
पूज्य श्री अरविन्द मुनि जी म., पूज्य श्री अमृत मुनि जी म.

के पावन चरणों में सादर कोटिशः वन्दन नमन

राष्ट्रीय कार्यकारिणी-2023, गुरु सेवक परिवार

संरक्षक

श्री मुकेश जैन
सफीदों

चेयरमैन

श्री विनोद जैन
लुधियाना

प्रधान

श्री मदनलाल जैन
पाथरी

महामंत्री

श्री दिनेश जैन
गन्नौर

कोषाध्यक्ष

श्री प्रवीण जैन
अहीर माजरा

मार्गदर्शक

श्री आशीष जैन
बड़ौत

उपप्रधान

श्री नीरज जैन
गीन पार्क, दिल्ली

उपप्रधान

श्री सुशील जैन
गाजियाबाद

उपप्रधान

श्री अंशु जैन
सूर्यनगर, दिल्ली

सहमंत्री

श्री गिरीश जैन
दिल्ली

सहमंत्री

श्री पंकज जैन
अरिहंत नगर, दिल्ली

सहकोषाध्यक्ष

श्री महावीर प्रसाद जैन
पानीपत

मीडिया प्रभारी

श्री पुनीत जैन
गन्नौर

सलाहकार

श्री पवन जैन
बलबीर नगर, दिल्ली

श्री सुदर्शन गुरवे नमः श्री अरूणचन्द्र गुरवे नमः

गुरु सेवक परिवार
GSP
स्वास्थ्य • सहयोग • संस्कार

सुशील जैन

9810078214

CHAIRMAN

Jain Iron & Steel Corporation

108, Loha Mandi, Ghaziabad

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष – गुरू सेवक परिवार

पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष – ऑल इण्डिया जैन कॉन्फ्रेंस

अध्यक्ष – रत्नत्रय उपकरण भंडार, गुरू सेवक परिवार

कार्यवाहक अध्यक्ष – जैन मिलन, गाजियाबाद

उपाध्यक्ष – समग्र जैन समाज संगठन, गाजियाबाद

महामंत्री – गाजियाबाद श्रीसंघ

परम संरक्षक – भगवान महावीर स्वामी पक्षी आवास एवं चिकित्सालय, मु.नगर

परम संरक्षक – आचार्य विमलसागर जैन चैरिटेबिल ट्रस्ट, शकरौली, जलेसर

संरक्षक – भगवान श्रषभदेव गऊशाला, मुरादनगर →

Narinder jain
80543-00035

Arihant Textiles

111, New Cloth Market
the Mall Bathinda-Punjab
Mob : +91-80543-00035

Rajeev jain

Vardhman Handloom

Naya Bazar, Sunam, Punjab
Mob : +91-9803026100

Sachin Jain

Nitin Jain

Kapil Jain

Funkee Star

Premium Wear

Kids Party Wear Colletion
Baba Suit, Indo Western, Sherwani
Kurta Pajama, Coat-Pant

Mfg. By

Sudharma Garment LLP

Shop : X/1297, Bhature Wali Gali, Gandhi Nagar, Delhi-110031
Head Office : Plot No. B-30, Sector-A-1, Tronica City Industrial Area, Gaziabad (UP)
Branch Office : X/3489-90, Street No.-4, Raghubar Pura No.-2, Ghandhi Nagar, Delhi-110031
Ph : 9354776177, 9810393816, 9212229381, 9250655206

Authorised Industrial Distributor

LuK INA FAG

SCHAEFFER GROUP

नीरज जैन
(9811116340)

Specialised industries : Cement, Paper & Sugar, Steel and Heavy industries, Textiles and Oil and Gas.

NAMISHWAR ENTERPRISES

Head Office
2373/108, 1st Floor, Gopinath Building, Shradhanand Marg, G.B. Road, Delhi-110006
Ph.: +91-11-23217889, +91-11-23214243, Telefax+91-11-23217889
Mob.: +91-98111-16340, +91-93111-16340, e-mail : namishwar@yahoo.com

Sister Concern

DODOMA KILIMO

Manufacturer & Exporter of Sunflower Oil & Cake
Block-57, Area A, Dodoma, Tanzania

श्री सुदर्शन गुरवे नमः
श्री महावीराय नमः
श्री अरूण गुरवे नमः

VSTP® LIGHTING

I.C. Goyal (Chairman)
Usha Goyal (Director)

Manufacturer of:

- *Octagonal Poles*
- *High Mast Poles*
- *Flag Mast Poles*
- *Decorative Poles*
- *Swaged Poles*
- *LED Street Lights*
- *LED Flood Lights*
- *Bollard Luminaires*
- *Post Top LED Luminaires*
- *Drop Down LED Luminaires*

IS 10322
R-91008540/75
ISO 14001:2015
ISO 9001:2015
ISO 45001:2018

VIPIN S.T. POLES PVT. LTD.

Poles & LIGHTING Solutions

KHARAR-HANSI ROAD, VILLAGE KUTUBPUR,
TEH. - HANSI, HISAR - 125044 (HARYANA)

Customer Support : +91 81999 49720, 90340 41720
E-mail: gechissar@gmail.com, info@vsphighmast.com | Website: www.vsphighmast.com

Warehouse : - Lucknow (UP) & Jaipur (Raj.)

अहिंसा
परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Praveen Jain
8368046727

Er. Shubham Jain
9773952739

Amit Jain
7982929788

Ajay Jain
9650411811

ROYAL PROPERTIES & BUILDERS
(Jind wale)

INDUSTRIAL
Bawana I Kharkhoda
& Agriculture Land

RESIDENTIAL
Pitampura I Rohini

Associates With
Maa Banbhori Developers Pvt. Ltd.

ajayjain242@gmail.com
Plot No. 28, Pocket-E, Sector-4, Bawana Industrial Area, Delhi-110039

IRCC Lic. No. R706211 Pb. Govt. Lic. No. 1168

Can help you in achieving your dreams...

GGI GURU GLOBE IMMIGRATION

STUDENTS
HOUSEWIVES
WORKING PROFESSIONALS
Can Also Apply

CANADA / AUSTRALIA / NEW ZEALAND

— IS CALLING YOU —

Get your Work permit in 30 Days*

It's now or never

- No Age bar
- Result Oriented
- No IELTS required
- 10th Pass can also apply
- Hassle Free Documentation
- Consultancy permissible by law
- 100 % as per Country's Govt. Norms

*T&C apply

SCO 38, 3rd Floor, Sector 32, Chandigarh Road, Ludhiana.
Ph. 0161-3501482, 483, 484, 485 | Email : info@guruglobeimmigration.com

CALL: 90560-55580
TOLL FREE NO. 1800 8900 580

Rajesh Jain Sonu Jain
9878559911

Sambhav Enterprises

Deals In :
Shuttering & Scaffolding Material
On Hire Basis

Plot No.-150, Hansa Industrial Park,
Barwala Road, Derabassi,
Distt. Mohali (Punjab)

SHREE BALA JI REAL ESTATE HAMBRA ROAD LDH

ARYAN MITTAL ESTATES LLP

113 D, Kitchlu Nagar, Ludhiana, Ph: +91 9872842690

Dimple Mittal

Aryan Mittal

GOEL ELECTRICALS

Arvind Goel
9811043794

Vasu Goel
8447671741

GSTIN: 07AA0PG7168F1ZG
Email:- goelelectricalsnsp@gmail.com
Office Add.:- Ground & 1st Floor, Plot No-25,
Khasra No-502/348, Pitampura Village, Delhi-110034

Distributor & Dealer of :

KEI Wires & Cables

legrand®

Panasonic LED Lighting

Lauritz Knudsen Electrical & Automation

L&T

RR KĀBEL

Schneider Electric

Finolex Cables Limited

POLYCAB

!! श्री सुदर्शन गुरवे नमः !! 卐 !! श्री महावीराय नमः !! 卐 !! श्री अरुणचन्द्र गुरवे नमः !!

गुरुभक्त राजेन्द्र जैन
इन्द्रपुरी (दिल्ली)

संघशास्ता पूज्य गुरुदेव
श्री सुदर्शन लाल जी म. सा
के चरणों में सादर कोटिशः वंदन नमन

गुरुभक्त मनोज जैन
इन्द्रपुरी (दिल्ली)

NATION AMERICA OUTFITTERS LLC

Importers And Wholesalers Ladies Clothing

Showroom: 110E, 9th St , C445, Los Angeles, CA90079, USA, Ph: +1 929 398 2577
Factory: 608, Pace City 2, Sec 37, Gurugram, Haryana, Ph: 9968093128, 9873342436
Works: D-181, Budhnagar, Inderpuri, New Delhi-110012

Pankaj Jain
Director

Sanjeev Jain
Director

AN ISO 9001 : 2008 CERTIFIED CO.

NAVKAR GROUP OF COMPANIES

Address : Kh. 76, Dada Bhaiya Marg, Ranholla Village, Nangloi, Delhi-110041

OUR OTHER COMPANIES : ★ Navkar Laminator Pvt. Ltd.
★ S.R. Industries ★ Navkar Plastic ★ Pap Plast India
★ Navkar Garbage Bag

Email ID : navkarplastic.1977@gmail.com, srindustries1973@gmail.com
Contact No: 9350150049, 9350250049 | Tel.: 011-28363730
Web : www.navkarplastic.com

रत्नत्रय प्रकाशन की अनुपम प्रस्तुति

स्वास्थ्य और संस्कार

शारीरिक मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य हेतु श्रेष्ठ मासिक पत्रिका

संरक्षक	प्रधान सम्पादक	प्रबन्धन
विनोद जैन 'लुधियाना'	निर्मल जैन 'गंगानगर'	दिनेश जैन 'डी-मॉल'

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय 10

प्रकोष्ठ 1. प्रवचन

1. बुझाओ इस प्यास को 11
2. जीवन से मैत्री करें 14
3. समय प्रबंधन और गुरुदेव 18
4. मस्त प्रवचन 20
5. श्री सुदर्शन लाल जी म. के वचनामृत 21

प्रकोष्ठ 2. एतिहासिक व तात्विक चर्चा

6. राजा भोज 22
7. पृथ्वीराज चौहान 22
8. जागो श्रावकों 23
9. खाद्य पदार्थों में जयणा 24

प्रकोष्ठ 3. JUST FOR KIDS

9. सीधे सवाल उलटे जवाब 25
10. अरिहंत वर्णमाला 26

प्रकोष्ठ 4. इन्द्रधनुषी विविधताएँ

11. चातुर्मास 27
12. प्रत्येक गृहिणी के पास कौन सी.. 32
13. दरियादिली 33
14. भजन 35
15. अपने बच्चों को जैनधर्म ... 36
16. एक गुमराह युवक के ... 37

प्रकोष्ठ 5. समाचार दर्शन

17. जमनापार में क्रांतिकारी धूम 40
18. गुंजायमान हुए गुरुदेवों के जयकारे 41

अभिकल्पन : राजेश पाण्डेय (9818460232), सज्जा : अजय जैन 'प्रथम' (9711774004)

प्रधान कार्यालय - स्वास्थ्य और संस्कार - प्रधान कार्यालय

एस. एस. जैन सभा, वेलफेयर ट्रस्ट
424, चौथी मंजिल, डी-मॉल-ट्विन डिस्ट्रिक सेन्टर,
सैक्टर-10, रोहिणी, दिल्ली-85 मो. : 8800779013

www.gurusewakparivaar.org info@gurusewakpariwaar.org https://www.facebook.com/gspparivaar

सम्पादकीय

कट्टर नहीं पवित्र बना

जैन दर्शन के शब्दकोश का एक सुनहरा शब्द है- भक्ति। भक्ति की पवित्र धारा एक साथ ही कर्मों के बहुभाग का सफाया कर देती है। जैन दर्शन में संख्या का नहीं, अपितु सद्भावना का महत्व है। सामायिक की संख्या मायने नहीं रखती, अपितु मायने रखता है- एक ही सामायिक को कितनी भावना के साथ किया गया है। ध्यातव्य है- तीर्थंकर गोत्र बंध के 20 बोलों में से प्रथम 7 बोल ऐसे हैं, जिनका बंधन भक्ति की तीव्र धारा के निमित्त से होता है।

भक्ति-आस्था-श्रद्धा-विश्वास-समर्पण; ये सब एक ही माँ की कोख से जन्म लेने वाली संतान हैं। भक्ति में सेंध लगाने वाले एक विनाशकारी तत्व का नाम है- कट्टरता।

कट्टरता एक संकीर्ण दायरा है, जिसमें अपनी ही दृष्टि संकुचित हो जाती है।

कट्टरता वो कांटे हैं, जिनकी चुभन आत्मा के लिए पीड़ाकारी है।

अत: सावधान! कभी कट्टरता से मित्रता नहीं करनी। गुरुदेव श्री सुदर्शनलाल जी म. का उत्तर भारत को सबसे बड़ा वरदान है- पवित्रता। उन्होंने अपने उपासकों को कभी कट्टरता नहीं सिखाई। आज उत्तर भारत के इलाके से बाहर के मुनिराज इधर पधारते हैं तो जन-श्रद्धाएँ उन्हें पलकों पर बैठाती है। यह उत्तर भारत का महान गौरव है एक ही स्थानक में संत संप्रदाय के संघ ठहरते हैं और चातुर्मास करते हैं। अन्यथा इलाके तो वो भी हैं जहाँ 1-1 किलोमीटर के दायरों में 20-20 स्थानकें हैं। आओ! धर्मप्रेमियों! हम प्रभु महावीर के सच्चे उपासक बनते हुए उनके अनेकांतवाद के सिद्धांत को आचरण में उतारे। संयम के सच्चे समर्थक बने। यदि आप सचमुच ही अपनी पवित्र भावना से जिनशासन को अक्षुण्ण-अखंड रखना चाहते हैं तो-

- निष्काम एवं निस्वार्थ भाव से पंच महाव्रतधारी मुनिराजों की भक्ति करें। लगाव-स्नेह किसी के प्रति कम-ज्यादा हो सकता है लेकिन भक्ति में कहीं कमी ना रखें। अच्छा होगा भक्त बनने की बजाय श्रावक बनें।
- भक्ति को अंधभक्ति ना बनने दें ताकि शिथिलाचारी प्रोत्साहित ना हो।
- पंचमहाव्रत रूप संयम है तथा महाव्रतों के सुरक्षात्मक प्रयास समाचारी रूप है। समाचारी के बहाने से कट्टरता प्रवेश करती है। अत: समाचारी सबकी अपनी-अपनी हो सकती है। जो द्रव्य-क्षेत्र- काल-भाव अनुसार मान्य होती है।
- जैन धर्म की चार संप्रदायों को विभाजन नहीं विस्तार समझें।
- सदैव स्मरण रखें : यदि अंदर में कट्टरता है तो मतलब कषायों का संसार जिंदा है और आगमकार कहते हैं- यदि कषाय हैं तो धार्मिक क्रियाएँ एक तरह से निरर्थक ही हैं।

अत: कट्टर नहीं पवित्र बनते हुए संपूर्ण सुधर्मा संघ के अनुयायी बनें।

भूल सुधार - पिछले अंक में आ. श्री जीवराज जी म. सन् 1609 में शुद्ध साध्वाचार हेतु दीक्षित हुए थे, अतः सुधार का पढ़ें।

1 बुझाओ इस प्यास को

गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म.

पं. चन्द्रशेखर नामक एक युवा ब्राह्मण-पुत्र काशी से न्याय, व्याकरण, धर्मशास्त्र, वेदान्त आदि का गहन अध्ययन कर घर लौटा था। उससे किसी ने पूछा,–'पाप का बाप कौन है?' पंडित जी एकदम सकते में आ गया। उसे ये प्रश्न ध्यान ही नहीं आया था। उसने फिर ग्रंथ टटोले, उत्तर वहाँ भी नहीं मिला। चूँकि उनकी प्रकृति जिज्ञासु थी, इसलिए समाधान पाने की प्रवृत्ति भी थी। प्रकृति के अनुसार ही प्रवृत्ति होती है। उसे काशी में पुनः जाना पड़ा ताकि ज्ञात हो सके कि पाप का बाप कौन होता है? वहाँ किसी से समुचित उत्तर नहीं मिला। फिर सोचा इसी बहाने तीर्थयात्राएँ कर लूँ।

जिन-जिन तीर्थों पर विद्वान्, पंडित, संत महात्मा मिले उनसे चर्चा की, पर आत्मिक संतुष्टि नहीं हुई। पंडित जी देशाटन करते-करते एक दिन पूना के सदाशिव पेठ से जा रहे थे। वहाँ विलासिनी नामक एक वेश्या ने अपने महल के झरोखे से पंडित जी के उदास चेहरे को देखा। दिमागदार तो थी ही। ये जरूरी नहीं है कि दिमाग केवल ब्राह्मणों और वणियो के पास ही होता है। दूसरी जाति के लोग भी दिमागदार हो सकते हैं और ऐसा भी नहीं है कि अकल सिर्फ मर्दों के पास होती है औरतें भी कितनी बार मर्दों से ज्यादा अक्लमंद और होशियार पाई जाती है।

विलासिनी तो वैसे भी बड़ी चुस्त और चालाक थी। वह आदमी की चालढाल से उसका अंदर का X-RAY ताड़ गई कि पंडित जी किसी मानसिक समस्या से ग्रस्त हैं। उसने अपनी दासी से कहा कि–ये पंडित जी रंगढंग से विद्वान् नज़र आते हैं, पर उदास हैं। इसका पता लगाकर आ।

दासी तत्काल नीचे आई। पंडित जी को प्रणाम किया। कहने लगी––महाराज मेरी स्वामिनी पूछ रही है कि आप उदास क्यों हैं? चन्द्रशेखर पंडित ने कहा–मुझे कोई रोग नहीं है, न ही मुझे धन की इच्छा है। वे मेरी कोई सहायता नहीं कर सकती। ये तो कोई शास्त्रीय गुत्थी है जो मेरे दिमाग में घूमती रहती है।

दासी ने फिर आग्रह पूर्वक कहा,–'यदि कोई हानि न हो तो आप अपने मन की बात बता दें।'

पंडित जी ने अपना प्रश्न दासी को बता दिया। थोड़ी-सी देर में दासी मालकिन के पास जाकर वापस पंडित जी के चरणों में हाजिर हो गइ और बोली,–'मेरी स्वामिनी कहती हैं कि आपका प्रश्न बहुत सरल है। पर उसका उत्तर जानने हेतु आपको कुछ दिन यहाँ ठहरना पड़ेगा।'

पंडित जी ने निमंत्रण स्वीकार कर लिया। वेश्या ने उनके लिए अलग भवन दे दिया और उनके पूजा-पाठ भोजनादि की समुचित व्यवस्था कर दी। चन्द्रशेखर जी बड़े कर्मनिष्ठ, शौच प्रधान ब्राह्मण थे। स्वयं जल भर कर लाते, स्वयं भोजन बनाते थे। विलासिनी प्रतिदिन प्रणाम करने आती थी। एक दिन उसने विनती की––भगवन्! आप स्वयं अग्नि के समक्ष बैठकर भोजन बनाते हैं, आपको धुआँ लगता है, इससे मुझे कष्ट होता है। आप आज्ञा दें तो मैं नित्य स्नान

करके, पवित्र वस्त्र पहनकर भोजन बना दिया करूँ। मुझे आप इतनी सेवा का सौभाग्य प्रदान करें तो मैं प्रतिदिन दस स्वर्णमुद्राएँ दक्षिणा के रूप में आपको अर्पित करने का भाव रखती हूँ। आपकी इस दया से मुझ अपवित्र नारी का भी उद्धार हो जाएगा।

पंडित जी को हिचक तो हुई किंतु स्वर्णमुद्राओं की पेशकश ने विचार बदल दिया। इसमें हानि क्या है? बेचारी शुद्ध होकर ही भोजन बनाएगी, फिर शुद्धि -अशुद्धि तो मन मानने की है। दूसरी नारियाँ क्या शुद्ध हैं? पुरुष में नारी की अपेक्षा अधिक शुद्धि का होना भी एक मान्यता ही तो है। ये तो सामाजिक पाबंदिया हैं, जो हम पर लागू कर दी गई हैं। यहाँ कोई समाज तो है नहीं जो उन बंधनों को मंजूर करूँ। कुछ दिन तक दस-दस मोहरें मिल जाएँगी तो वर्षों तक की समस्या का समाधान हो जाएगा।

इन विचारों के तहत उसने विलासिनी का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। वेश्या ने पूर्णशुद्धि के साथ खाना बनाया। पंडित जी के पैर धुलवाए। सुंदर पट्टा बिछाकर पकवानों से भरा थाल परोस दिया। पंडित जी जैसे ही खाने के लिए हाथ आगे बढ़ाने लगे, विलासिनी ने थाल पीछे सरका लिया। पंडित जी चकित हो गए।

वेश्या खुद ही बोल उठी,–'मुझे क्षमा करें देव! मैं एक कर्मनिष्ठ ब्राह्मण को आचारच्युत नहीं करना चाहती। मैं तो आपके प्रश्न का उत्तर देना चाहती थी। जो दूसरे का लाया हुआ जल भी काम नहीं लेते, वे शास्त्रज्ञ, सदाचारी ब्राह्मण जिसके वश में होकर एक वेश्या का बनाया हुआ भोजन स्वीकार करने को उद्यत हो गए, वह लोभ ही पाप का बाप है।'

पंडित जी को शर्म तो बहुत आई मगर एक प्रश्न का Practical उत्तर मिल गया जो कि Theoritical उत्तरों से ज्यादा प्रामाणिक, स्थायी और सच्चा था।

जब उज्जैनी के सेठ ने 5 रुपए के लोभ में बकरा कसाई को थमा दिया, उसी समय वही मुनिराज उसकी दुकान के बगल से गुजर रहे थे। उन्होंने सारा नजारा देखा और नजारे के भीतर छिपे अन्य रहस्यों का पर्दा उनके ज्ञान चक्षुओं से हट गया। उन्होंने देखा- कितना स्वार्थमय संसार है। अपने पिछले जन्म के पिता को 5 रुपए के लोभ में कसाई के हाथ में सौंप रहा है। हाय री लोभ की विडम्बना!

और फिर मुनिराज जोर से हँस पड़े। हँसी का फव्वारा फूटा ही था कि सेठ का तन बदन झुलसने लगा। उसे प्रतीत हुआ कि ये संत मेरी हर बात पर हँसकर मेरे जख्मों पर नमक छिड़क रहे हैं। मुझे खुलकर बात करनी होगी, नहीं तो इनका ये रवैय्या बदलेगा नहीं।

सेठ दुकान से तुरंत बाहर आया और बिना किसी वंदना नमस्कार के कहने लगा- मुझे आपसे कुछ बात करनी है।

.....जो दूसरे का
लाया हुआ जल भी
काम नहीं लेते, वे शास्त्राज्ञ,
सदाचारी ब्राह्मण
जिसके वश में होकर
एक वेश्या का बनाया हुआ
भोजन स्वीकार करने
को उद्यत हो गए,
वह लोभ ही
पाप का बाप है।

संत बोले--ये तो मुझे पहले ही पता था। मगर आपसे निवेदन है कि आप रात को उपाश्रय में आ जाना। वहीं अच्छे खुलासे के साथ बातें हो जाएँगी। यहाँ राह चलते-चलते सही समाधान नहीं होगा। हाँ, इतना जरूर है कि हमारा इरादा आपको लज्जित और अपमानित करने का नहीं रहा। कुछ अंतरंग सी बातें हैं, वे बैठकर ही होंगी। सेठ को कुछ शांति पड़ी। सूर्यास्त के पश्चात् प्रतिक्रमण की प्रक्रिया हो चुकी तब वह अकेला गुरुचरणों में पहुँचा। यथोचित विनय करके चरणों में बैठ गया। फिर उसने अपनी मानसिक शंका का समाधान लेने के लिए उनसे निवेदन किया।

वैसे भी शंका को मन में रखने की बजाय पूछ लेना अच्छा रहता है। कुछ लोग बात को पूरी तरह समझते हैं नहीं, केवल आधी-अधूरी बात सुनी, अस्पष्ट-सी घटना देखी और मन में शंका बैठा लेते हैं। 'संका सम्मतं नासेइं' यदि शंका लम्बे समय तक अंदर पड़ी रहे तो समकित को नष्ट कर देती है।

सम्यक्त्व के पांच अतिचारों में पहला अतिचार शंका है। शंका मन का काँटा है जो मन को चैन से नहीं बैठने देता। पैर में काँटा चुभा रहे तो आदमी ठीक से चल नहीं सकता, रात को सो नहीं सकता। ऐसे ही मन में कोई शंका घुस जाए तो निकले बगैर दु:खी करती रहेगी।

कहा भी गया है- 'ससर्पे च गृहे वास:'। किसी घर में साँप दिखाई दे जाए तो कोई उस घर में सो नहीं सकता। ऐसे ही शंका का हाल है। ये मन के कोने में रहेगी तो धर्म, कर्म, विनय भक्ति सबको

सम्यक्त्व के पांच अतिचारों में पहला अतिचार शंका है। शंका मन का काँटा है जो मन को चैन से नहीं बैठने देता। पैर में काँटा चुभा रहे तो आदमी ठीक से चल नहीं सकता, रात को सो नहीं सकता। ऐसे ही मन में कोई शंका घुस जाए तो निकले बगैर दु:खी करती रहेगी।

अस्त-व्यस्त करती रहेगी।

एक क्षेत्र के श्रावक बड़े गुरुभक्त थे। संतों की सेवा करते, प्रवचन सुनते, पता चलता तो दूर तक लेने जाते, विहार के समय छोड़ने जाते। ये सब क्रियाएँ श्रद्धालु श्रावकों की होती हैं।

एक बार किसी प्रख्यात मुनि संघ का नगरी में आगमन होने जा रहा था। प्रमुख श्रावक- श्राविकाएँ उनको लेने के लिए आगे जा रहे थे। उसी दिशा से एक घुड़सवार आया। उससे श्रावकों ने पूछ लिया--क्या तूने रास्ते में हमारे गुरु देखे हैं? वे कितनी दूर हैं? घुड़सवार ने कहा--यहाँ से 2-3 मील दूर वे नदी में पानी पी रहे थे। (क्रमश:)

जो न देते थे जबाब, उनके सलाम आने लगे
वक्त बदला तो मेरे नीम पे आम आने लगे

जीवन से मैत्री करें : युवा पीढ़ी

आगमज्ञाता गुरुदेव श्री अरुणचन्द्र जी म.

कैसे अदा करेंगे, उपकार हम तुम्हारे,
हम तो बने सितारे, गुरु आपके सितारे। (भजन)

जिसके पास शांति है, वह शहंशाह है, धनी है, अमीर है। यह शांति ही तो महावीर की साधना है। शहंशाह बनने के लिए महावीर के पदचिह्नों पर चलना बहुत आवश्यक है। मैत्री का रास्ता अपनाओ।

हमारा विषय चल रहा है- जीवन से मैत्री करो। आओ कहो- मैं शपथ लेता हूँ कि जीवन से मैत्री करूँगा। तभी मोक्ष के रास्ते खुल सकते हैं। शपथ लो- अपने जीवन में मन, तन और चेतना को कभी परेशान नहीं करोगे। यह तीनों ही तो मिलकर जीवन बनाते हैं।

चेतना के स्तर पर वह इन्सान बहुत ऊँचा उठ जाता है जो जीवन में खुद को परेशान नहीं करता। और दूसरों का भी बुरा नहीं सोचता। गजब का शास्त्र है भगवान महावीर का और हम उसमें से चुन-चुन कर मोती दे रहे हैं आपको। मैत्री के पाँच गुणों में आज पाँचवा गुण आपको देने जा रहे हैं।

'प्रतिक्रियाओं से बचो'।

धर्म में Admission लेकर कर्म कांड करने की सोचते हो। जब धर्म तत्वों की साधना की जानकारी होती है तब अनुभव ज्ञान होता है और अनुभवी ज्ञान पाते ही तुम्हारी चेतना का स्तर बढ़ने लगता है। मैं शांत रहूँगा, यही जीवन का रस है। ऐसे भाव पैदा करो। प्रतिक्रियाओं से बचो। जितना कम Reaction होगा उतने ही शान्त रहोगे। एक होती है गोली, जिसे Medicine कहते हो, वही Reaction कर जाए तो कितनी दिक्कत हो जाती है। उस वक्त तुम्हारे मन की स्थिति क्या होगी। इन्हीं प्रतिक्रियाओं के चलते हुए महावीर के धर्म से दूर होते चले जाओगे।

हिन्दी का एक शब्द है टीका-टिप्पणी। जितना करोगे, उतना ही तुम्हारी शान्ति भंग होती चली जाएगी। तपस्या नहीं करनी ना सही काम चल सकता है लेकिन अगर निर्जरा चाहते हो तो 24 घण्टे की तपस्या करो कि आज मैं प्रतिक्रिया नहीं करूँगा। ऐसा मौन करो जो तुम्हारे मन-विचार शुद्ध करे, उन्हें शान्ति दे। त्याग दो अपने खोखले कर्म कांडों को। मोक्ष पाना है तो महावीर की साधना करो। जीवन से मैत्री करो। गजब है ऐसी साधना और विचारों का मौन। कर्म-कांडियों सुनो, मोक्ष पाना है तो महावीर की साधना करो। ऐसे उपवास करो, जिससे मन शान्त रहे। औरों के द्वारा की उचित-अनुचित क्रियाएँ तुम पर प्रभाव क्यों डालती हैं? तुम दु:खी क्यों होते हो?

निरपेक्ष भावना, लोगों की क्रियाओं पर अन्धा-बहरा होना प्रतिक्रिया से बचना है। लोग आकर

> शपथ लो- अपने जीवन में मन, तन और चेतना को कभी परेशान नहीं करोगे।....
> चेतना के स्तर पर वह इन्सान बहुत ऊँचा उठ जाता है
> जो जीवन में खुद को परेशान नहीं करता। और दूसरों का भी बुरा नहीं सोचता।
> गजब का शास्त्र है भगवान महावीर का।

कहते हैं- गुरु महाराज! सब किया। पूजा, पाठ, सत्संग पर खुद को प्रतिक्रियाओं से नहीं बचा पा रहा।

अशान्ति से आठ कर्मों का बन्धन होता है। प्रतिक्रिया से शान्ति के टुकड़े हो जाते हैं। हम नर्तकी को रस्सी पर नाचते देखते हैं। जरा सा होश बदला, ध्यान भटका तो खेल खत्म। जीवन भी नृत्य है हमें भी नाचना होगा, पर होश में रहकर। प्रतिक्रियाएँ बेहोशी देती हैं। आज तो मुहपत्ती, माला, तपस्या, ब्रह्मचर्य में रहकर भी प्रतिक्रियाएँ हो रही हैं। महावीर कहते हैं- यह आत्मा का धर्म है। ज्ञान, दर्शन का धर्म है। आत्मा को नजदीक लाओ। आनन्द अपने आप आएगा, फिर मोक्ष दूर कहाँ। जीते जी मोक्ष पा सकते हो।

इन सब चीजें का experience करो, बदलाव लाओ, अच्छा होने का प्रयास करो। होना था हो गया। अब कुछ अच्छा नहीं हो सकता। ऐसी सोच भी गलत है। सोचो, अभी तो अच्छा होना बाकी है। कोशिश करो। क्या नहीं पाया जा सकता। जीवन की दिशा बदलने के लिए नई दिशा ढूँढ़नी होगी। होश रखना होगा, विवेक से हर कार्य करना होगा। स्थानक की हर क्रिया को होश में रहकर समझदारी से करो। कोई व्यंग्य करे, कुछ भी कहे, साधक वही जो किसी भी हालात में प्रतिक्रिया नहीं करता। औरों की बात छोड़ो किसी को क्या कहना आज जरा खुद को ही टटोल कर देखो।

अशान्ति से आठ कर्मों का बन्धन होता है। प्रतिक्रिया से शान्ति के टुकड़े हो जाते हैं। हम नर्तकी को रस्सी पर नाचते देखते हैं। जरा सा होश बदला, ध्यान भटका तो खेल खत्म। जीवन भी नृत्य है। हमें भी नाचना होगा, पर होश में रहकर। प्रतिक्रियाएँ बेहोशी देती हैं।

गौतम महावीर से कहने लगे, फला-फला ऐसा कर रहा है। तभी महावीर बोले- गौतम, संभलो। यह बातें तुम्हें शोभा नहीं देती। तुम यहाँ अन्तर्मुखी बनने आए हो। जानकारी पाने नहीं, ज्ञान बटोरने आए हो। स्वरूप में रमणता लाओ। आत्मा की खोज करो। अपनी energy दूसरों में क्यों लगानी। ज्ञान पाओ। दूसरों की बातों में ज्ञान पाना समझदारी नहीं है।

आपने कई उपवास किये होंगे लेकिन अब 24 घण्टे का एक उपवास करो जिसमें प्रतिक्रिया ना हो। ऐसा मौन करते ही आनंदित जीवन प्रतीत होगा। आवश्यकता कर्मकांड की नहीं, समझदारी की है। आज तुम छोटी-छोटी वार्ता पर प्रतिक्रिया दिखाते हो। गौर करो इन पंक्तियों पर, जब समस्याओं पर तुम किसी को phone करो वह न उठाये, बीमारी में कोई हाल न पूछे, थके हो पानी न मिले, समय पर कोई काम न करे, वादे से मुकर जाये, पड़ोसी कचरा फेंक दे, समय पर order पूरा न हो, देश मैच हार जाये, सट्टे में घाटा हो जाये, सारे काम अकेले करने पड़ जायें, कोई किसी से तुम्हारी तुलना करे, किसी बात से डर लगे, बीवी से ख्यालात न मिलें, लोगों की कमियां दिखने लगे। T.V. पर movie देख रहे हों और light चली जाये। ऐसे कई उदाहरणों पर तुम्हारी कोई प्रतिक्रिया न हो तो समझो मोक्ष पा लिया।

संसार के प्रति शांत भाव दिखाओ। उचित-अनुचित दृश्यों और घटनाओं के सामने आने पर अगर तुम तटस्थ, मध्यस्थ हो तो मोक्ष पास है। जिसके पास जितनी समझ है वह उतनी ही करेगा। टिक्का-टिप्पणी करके न तुम्हें फायदा होगा न उसे समझ आयेगा। जो जैसा करता है वैसा करने दो।

खिलाफत तो महावीर की भी हुई थी। दुनिया ने तो हमारे गुरु सुदर्शन को भी नहीं छोड़ा, उनके खिलाफ किताब निकाली थी। पहले राजा प्रतिक्रियाएँ दिखाते थे अब आता-जाता भी। याद रखना, निन्दा 18 पापों में से एक है। एकेन्द्रिय की हिंसा तो बहुत ध्यान में रखते हो लेकिन निन्दा को भूल जाते हो।

1985 में जब किताब निकली तो श्रावकों का Deputation आया, जवाब मांगें गए, समर्थन भी किया गया, विरोध भी। लेकिन गुरु महाराज मौन रहे। अपना विरोध होने पर मौन रहना आगमों का निचोड़ कहलाता है। जो मौन रहता है वही मोक्ष पाता है।

भगवान महावीर के 14 हजार साधुओं में से कुछ ही मोक्ष गये थे। सब की करनी सबके साथ जाती है। हर किसी का संयम एक जैसा नहीं होता। बहस करके अपनी energy waste क्यों करना। दुनिया के पास जो होगा वही तो देगी। प्रशंसा, क्रोध, निन्दा, अपमान, प्रणाम, दुनिया समय-समय पर वक्त बदलते देती रहती है। प्रभु पहले मैं बहुत कर्मकांडी था, मुख-पट्टी लगाई, उपवास किया मोक्ष नहीं मिला। अरे श्रावकों यह तो शुरुआत है, इसको end मान कर खुद को खुदा मत मानो। खुदा वह है जो खुद में आये दूसरों को छोड़ दे।

मैं सीखूं अपने में ही मस्त रहना...(भजन)

एक दिन श्रेणिक महाराज ने देखा। कहानी है या हकीकत, हम नहीं जानते। लेकिन साधु-साध्वी को एक साथ देखा गया। श्रेणिक ने देखा साधु पेड़ से तोड़कर फल खा रहा था और उसके पीछे-पीछे गर्भवती साध्वी। गजब है यह कथन। साध्वी और गर्भवती! लेकिन श्रेणिक महाराज की कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई कि बिना सोचे-समझे साधु बना लेते हैं वे देवता की परिक्षा में पास हो गए। साधु वही, जिसे भगवान का धर्म समझ आये, संयम पाले, शांत रहे, अपनी ऊर्जा को समाधि, ध्यान और कायोत्सर्ग में लगाये। डूबने वाले, निन्दा करने वाले सब हैं। इन सब से पृथक् हो जाओ तर जाओगे।

एक श्रावक बोला- गुरु महाराज! मुझे कुछ सिखाओ। गुरु बोले, कबर पर जाकर फूल चढ़ाकर आओ। अगले दिन कहा- पत्थर मार कर आओ। श्रावक ने कारण पूछा तो गुरु महाराज बोले- जैसे कबर पर फूल या पत्थर फेंकने पर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। एक जैसा रहा। यही है महावीर की साधना। यही निचोड़ है।

अभी तो शुरुआत है। बहुत ज्ञान की

संसार के प्रति शांत भाव दिखाओ। उचित-अनुचित दृश्यों और घटनाओं के सामने आने पर अगर तुम तटस्थ, मध्यस्थ हो तो मोक्ष पास है। जिसके पास जितनी समझ है वह उतनी ही करेगा। टिक्का-टिप्पणी करके न तुम्हें फायदा होगा न उसे समझ आयेगा। जो जैसा करता है वैसा करने दो।

आवश्यकता है। तुम भी अपनी आत्मा को वर्तमान में लाओ। प्रतिक्रियाओं से बचो। आज अग्निकाय हिंसा से खूब डरते है, संघट्टा लग जाता है पर प्रतिक्रियाओं से डर नहीं लगता। हर दिन ढोंग करते हैं। यह सबसे बड़ी हिंसा है, जिसकी तरफ ध्यान ही नहीं है।

झूठ, कपट, प्रतिक्रियाओं में सबसे ज्यादा हिंसा है क्योंकि सबसे ज्यादा हिंसा मन द्वारा ही होती है। इसे अपने स्वभाव से दूर करो। आत्मा को वर्तमान में लाओ। कहो- हे प्रभु! मुझे और कुछ समझ में आए ना आए। यह मेरा दिमाग है और इसे दूसरों पर टिप्पणी करनी ना आए। मुझे ऐसी ही बातें सीखनी है।

आदमी अकेला ही आता है जाता है,
दुनियां में यादें छोड़ जाता है। (भजन)

Let's feel first then act. पहले अनुभव करो, कुछ समय होश में गुजारो, फिर कार्य करो। बेहोशी में की गई प्रतिक्रिया हमेशा गलत साबित होगी। अब यह बता प्रतिक्रियाएँ करते हो। मन में कोई परिवर्तन नहीं। कोल्हू के बैल की तरह काम करते जा रहे हो। जब मन नहीं बदल सका, वह दुनिया बदलने का दावा करता है। हम तो केवल राह दिखा सकते हैं। चलना व करना तुम पर निर्भर है। अच्छे-बुरे का चुनाव तुम करो। अगर वर्तमान से मैत्री करना चाहते हो तो एक बार त्याग भाव से द्रव्य तप नवकारसी करके देखो। तुम्हारा जीवन सार्थक हो जायेगा। पौषध, बेला, तेला करना फिर भी आसान है। मुश्किल है तो प्रतिक्रियाओं को छोड़ना। महावीर के सामने नर्तकियां नृत्य करने आती थी, लेकिन प्रभु पर कोई असर नहीं हुआ। स्वभाव से अहंकार को त्यागो। बहुत मुश्किल है Practically खुद को खुद से जोड़ना।

अंत में यही कहेंगे कि अगर शांति लानी है, वर्तमान में जीना है तो ध्यान व मौन का सहारा लो। प्रतिक्रियाएँ केवल अशांति ही लाती है।

महानता से बिन्कुल न डरें!
कुछ लोग महान पैदा हो हैं,
कुछ महानता हासिल करते हैं और
कुछ लोगो में महानता सम्माहित होती है

हम जानते हैं कि हम क्या हैं-
लेकिन ये नहीं जानते हम क्या कर सकते हैं।

हमारा भाग्य सितारों और ग्रहों के बस में नहीं है
बल्कि हमारे वश में है।

सुनहरा युग हमारे सामने है न कि पीछे

3 समय प्रबंधन और गुरुदेव

आगमज्ञाता गुरुदेव श्री अरुणचन्द्र जी म.

समय का हमारे जीवन में अति महत्त्वपूर्ण स्थान है। समय धन से भी अधिक मूल्यवान है। क्योंकि धन प्रक्रिया करने पर पुनः वापिस आ सकता है, परन्तु बीता हुआ समय कभी पुनः लौट कर नहीं आता। अतः समय अमूल्य है। प्रकृति उसी का सम्मान करती है जो व्यक्ति समय का सम्मान करता है। अतः जीवन की सफलता के लिए समय का प्रबंधन अति आवश्यक है। समय प्रबंधन का अर्थ विभिन्न गतिविधियों पर खर्च किए जाने वाले समय की मात्रा का निर्णय व उसे नियंत्रित करने की कला में हैं।

❁

गुरुदेव के जीवन में समय प्रबंधन का अद्भुत कौशल था। जिन आत्माओं को गुरुदेव के साक्षात् दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, उन्होंने इस युग के भगवान के दर्शन कर लिए। उनके नेत्र पवित्र हो गए। हमारा सौभाग्य है कि हमारा जन्म गुरु सुदर्शन युग में हुआ। हमने गुरु चरणों की शरण प्राप्त की है। उनके प्रति अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया।

मैंने दीर्घकाल तक गुरुदेव के चरणों में रहकर उनकी जीवन-शैली को निहारा है। मैं एक बात पूर्ण विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि गुरुदेव समय के पूर्ण पाबंद थे। वे किस कार्य को, कितने समय में, किस ढंग से सम्पन्न करना है, इस विषय में पूर्ण जागरूक रहते थे।

❁

गुरुदेव के जीवन की एक समय सारणी थी। किस-किस समय ध्यान, स्वाध्याय, लेखन, आत्मचिंतन व श्रावकों से वार्तालाप करना। दिनचर्या को विभिन्न विभागों में विभक्त किया हुआ था। उस समय उसी कार्य को महत्व देते थे।

गुरुदेव ने जीवन के प्रारम्भ से ही टाइम मैनजमेंट को पहचाना। आप देखिए, जब उन्होंने संयम पथ पर कदम बढ़ाने का दृढ़-निश्चय किया। उस समय

उनके परिवार का बहुत दबाव था कि यह बालक अभी दीक्षा न ले। परन्तु गुरुदेव को ज्ञात था कि जीवन निर्माण का उचित समय यही है। उन्हें विचलित करने के बहुत प्रयत्न किए गए। वे अपने निर्णय पर अडिग रहे।

❁

दीक्षा के उपरांत उन्होंने श्रावक परिचय तथा वार्तालाप में समय व्यर्थ नहीं गंवाया। चार वर्ष तक दत्तचित होकर अध्ययन करते रहे। संस्कृत, प्राकृत, थोकड़े व आगमों का गहन अध्ययन किया। कुछ साधक संयमकाल के प्रारम्भिक समय को हँसी-मजाक या वार्तालाप में व्यर्थ गंवा देते हैं। परन्तु गुरुदेव ने अपने संयमी जीवन के एक-एक क्षण को सार्थक किया। गुरुदेव ने अपनी संयम यात्रा में अध्ययन, स्वाध्याय व सेवा-साधना को महत्व दिया।

जैसे-जैसे दीक्षा पर्याय बढ़ने लगी। शिष्य परम्परा का विकास होने लगा। श्रावक वर्ग भी विशाल हो गया। परन्तु फिर भी गुरुदेव मौन रहकर अध्ययन व स्वाध्याय के लिए समय निकाल लेते थे। व्यस्तता में भी उनका समय प्रबंधन गजब का था।

❁

मैंने देखा कि गुरुदेव प्रवचन के समय के पाबंद थे। समय पर प्रवचन समाप्त करना। मौन व प्रतिक्रमण का समय फिक्स था। गुरुदेव को प्रातः जागरण के लिए अलार्म की आवश्यकता नहीं थी। समय पर शयन व प्रातः उठने का समय निश्चित था। किसी कार्य में विलंब करना या आलस्य सेवन करना यह शब्द तो उनकी डिक्शनरी में ही नहीं थे।

किसी श्रावक या संत को समय दे दिया तो उस समय की मर्यादा का कभी उल्लंघन नहीं किया और न ही किसी संत को मर्यादा का उल्लंघन करने देते थे। यदि किसी ने समय रहते कार्य पूर्ण नहीं किया तो उसे समय के प्रबंधन की नसीहत देते थे।

❁

प्रवचन सभा में अक्सर गुरुदेव एक बात फरमाते थे कि श्री गणेश बनो अर्थात् प्रवचन के प्रारम्भ में ही उपस्थित रहो। अध्यापक के आने से पूर्व आने वाला विद्यार्थी ही कुछ सीख सकता है और जीवन में विकास कर सकता है। यदि आप भी अपनी आध्यात्मिक उन्नति चाहते हो तो समय पर उपस्थित हो जाओ।

अगर कई बार श्रावक भी यह निवेदन कर देते कि गुरुदेव कुछ समय और जिनवाणी का लाभ दे दो तो गुरुदेव फरमाते, समय की सीमा का पालन करना ही प्रभु का प्रथम उपदेश है।

❁

सन् 1983 में मेरी व श्री अचल मुनि जी की दीक्षा का समय निश्चित हुआ था। विहार लंबा था। घुटनों की तकलीफ भी बढ़ रही थी। परन्तु गुरुदेव की संकल्प शक्ति देखें। निर्धारित समय पर बठिंडा में पर्दापण किया।

ऐसे महान् गुरुदेव की जन्म शताब्दी महोत्सव पर हम भी यह संकल्प लें कि अपने जीवन का प्रत्येक कार्य समय पर पूर्ण करेंगे। जीवन में आलस्य का सेवन नहीं करेंगे। यही हमारी गुरुदेव के चरणों में सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

❁

ऐसे करुणावतार गुरुदेव को शत-शत प्रणाम।

मस्त प्रवचन

चक्षु-विमर्श

"डॉक्टर साहब, मैं एक बात जानना चाहती हूँ।"

"कहिये?"

"मेरे पति को दवाई आपने दी है?"

"जी हाँ।"

"आपने कैसी दवाई दी है कि...,"

"क्यों, क्या दवाई कुछ गलत हो गई?"

"हाँ!"

"क्या हुआ?"

"उन्होंने मेरी ओर देखना ही बंद कर दिया है।"

"मैंने तो केवल आपके पति की आँखें ही अच्छी की है।"

डॉक्टर ने जवाब दिया।

एक आँख है जिसे "चर्मचक्षु" कहा जाता है,
एक आँख है जिसे "विचारचक्षु" कहा जाता है,
एक आँख है जिसे "विवेकचक्षु" कहा जाता है,
एक आँख है जिसे "श्रद्धाचक्षु" कहा जाता है,
श्रद्धाचक्षु मन को गलत का, अनुचित का
त्याग करने के लिए प्रेरित करते हैं, जबकि
विवेकचक्षु मन को गलत में संयम (नियंत्रण) रखना सिखा देते हैं।
यद्यपि, जिसकी नजर केवल "खाओ, पीओ और ऐश करो"
पर होती है, उसे श्रद्धाचक्षु और विवेकचक्षु
कभी नहीं सुहाते, और
जिसकी नजर में सद्गुण होते हैं
उसे श्रद्धाचक्षु और विवेकचक्षु के बिना
पलभर भी चैन नहीं मिलता है।
स्वयं से पूछ लेना कि जीवन के चालक तत्त्व कौन-से चक्षु हैं।

5 परमाराध्य, शासननायक गुरु भगवन्त श्री सुदर्शन लाल जी म. के वचनामृतों के कुछ अंश

1. मांगलिक गुरु का प्रसाद है मंगल कामना है ये शब्द आत्मा का कल्याण करने वाले हैं। जैन फकीर आत्मा में दृष्टि पैदा करते हैं जब मन्दिर में जरा-सा प्रसाद मुँह मीठा कर देता है। जो इन चार का शरणा ले, उसके तो भव-भव के अनन्तानन्त बंधन ही कट जाते हैं।
2. अपनी आत्मा के दोषों को निकाल कर हर आदमी भगवान बन सकता है। भगवान महावीर ने ये नया फार्मूला प्रणीत किया था।
3. आज हितैषियों का अकाल पड़ता जा रहा है। हितैषी अनन्त पुन्य से मिलता है। आज हम हितैषी को विरोधी मान रहे हैं और विरोधी को हितैषी।
4. कोई आपका काम करे तो उसे हौंसला दो, गल्ती हो जाए तो गाते मत फिरो।
5. हम जरा सी मुसीबत में घबरा जाते हैं। यदि न घबराएँ तो मुसीबत खुद रास्ता देगी। धर्मात्मा की मुसीबत तो सिद्धि है। अच्छा है कि कर्म उदय में आ जाएँ और मैं इन्हें पार कर दूँ, तो कल्याण का मार्ग साफ हो जाएगा।
6. जैन कभी मुसीबत में हथियार नहीं डालता। वह सोचता है कि ये मेरा किया हुआ ही मुझे मिल रहा है।
7. गुरु धर्मदाता, जीवनदाता है, गुरु नीचे से ऊपर ले जाते हैं। माँ-बाप स्वर्ग से धरती पर लाते हैं बच्चे को, गुरु अनेकों को सहारा देकर पार करते हैं।
8. जो ऊपर का मीठा अन्दर का काला, वह साँप से भी ज्यादा खतरनाक होता है।
9. चन्दना, सुदर्शन पर कितने दुख पड़े फिर भी नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं बोलते रहे। दुनियां में रहेंगे तो चिन्ता तो रहेगी।
10. दायाँ पाँव जरूरी कि बायाँ, चलें तो दोनों चलें बैठें तो दोनों बैठें, एक पाँव दूसरे का हेल्पर है कहता है तू उठले भईया मैं तेरे पीछे हूँ। गृहस्थ की गाड़ी भी ऐसी बनाओ।
11. आज भगवान नहीं है पर आगम का आधार तो है। आर्य सुधर्मा जी, आर्य जम्बू जी 12-12 घण्टे आगम का अध्ययन कराते थे, जुबानी याद रखते थे।
12. शासन में चलना होगा, आगम की ज्योत को ले कर चलना होगा। श्रद्धा वालों के लिए 32 सूत्र हैं। अश्रद्धा वालों के लिए तो भगवान महावीर भी नहीं हैं।

6 राजा भोज
(शासनकाल सन् 1000-1055 ई.)

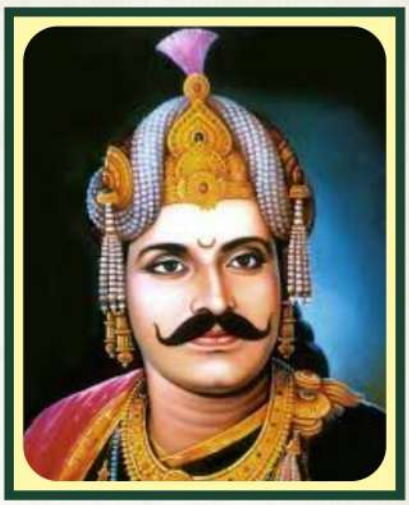

राजा भोज परमार या पंवार वंश के नवें राजा थे। परमारवंशीय राजाओं ने 8वीं शताब्दी से लेकर 14वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक राज्य किया। राजा भोज वीर योद्धा के साथ कुशल प्रशासक, दार्शनिक एवं ज्योतिषी थे। उनके द्वारा लिखे 84 ग्रंथों में से मात्र 21 ही प्राप्य हैं। धार में भोज शोध संस्थान में इनके द्वारा रचित ग्रंथ संग्रहीत हैं।

इन्हीं राजा भोज के नाम पर कहावत जनमानस में प्रसिद्ध है-

कहां राजा भोज, कहां गंगू तेली।

7 पृथ्वीराज चौहान
(शासनकाल सन् 1149-1192 ई.)

पृथ्वीराज चौहान, चौहान वंश के राजा थे। उनका राज्य वर्तमान के राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, पंजाब, मध्य प्रदेश और पश्चिमी उत्तर प्रदेश तक फैला हुआ था। उनकी राजधानी अजयमेरु (अजमेर) थी।

मुस्लिम आक्रांता मुहम्मद गौरी को उन्होंने 17 बार पराजित किया और जीवनदान दिया। 18वीं बार तराइन के दूसरे युद्ध में वे मुहम्मद गौरी से हार गये और कालान्तर में गौरी ने उनकी हत्या करवा दी। 'पृथ्वीराज रासो' उनके जीवन पर लिखा गया महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इस ग्रंथ की हस्तलिखित पाण्डुलिपि 'अभय जैन ग्रंथालय', बीकानेर में सुरक्षित है। पृथ्वीराज चौहान की पराजय को भारत में मुसलमानों की विजय का राजद्वार कहा जा सकता है।

कर्म फल चिन्तन

8 जागो श्रावको

(1) निर्धन होवे – पराया धन हरण करने से।
(2) दरिद्र होवे – दान देकर पछतावा करने से।
(3) धन में धन होवे पर काम न आवे– दान देते हुए को मना करने से।
(4) पुत्र–पुत्री न होवे – आम वृक्ष काटन से।
(5) स्त्री बांझ रहे – वृक्ष पर पत्थर मारने से, फूल पत्ती तोड़ने से, मकड़ी का जाला उड़ाने से।
(6) स्त्री बांझ होवे – हिंसा करने से, चोरी करने से, असुस्ता दान देने से।
(7) गर्भ में जीव मर जाये – गर्भवती का गर्भ गिराने से, धरोहर हड़पने से।
(8) गर्भ गल कर मर जावे – मद्य, मांस, अंडा खाने से, भरता करने से, हरी सब्जी का चूर्ण करने से।
(9) काने होवे – फूल बींधने से, पान और फूल में सुई घुसाने से।
(10) अंधा होवे – धुंआ करके मच्छर मारने से, त्रस जीवों को पानी में डुबोकर मारने से।
(11) गूंगा होवे – देव गुरु धर्म की निन्दा करने से।
(12) बहरा होवे – पराये का भेद लेकर बाहर कहने से।
(13) रोगी होवे – पिंजरा बेचने से, अधिक फल खाने से।
(14) मोटा शरीर होवे – साहूकार होकर साहूकार का धन चोरी करके मना करने से।
(15) कोढ़ होवे – वन में आग लगाने से, सर्प मारने से।
(16) दाद, खाज का रोग होवे – घोड़े बैल पर अधिक माल लादने से, भूखे प्यासे रखने से।
(17) अस्थिर चित्त होवे – उच्च कुल का अभिमान करने से, मांस करके झूठ बोलने से।
(18) पथरी का रोग होवे – माता पुत्री से भोग भोगने से, मन में भोग अभिलाषा रखने से।
(19) विधवा होवे – अपने पति का अपमान करने से, पराये पति से रमण करने से।
(20) वेश्या होवे– उच्च कुल की बहु बेटी द्वारा परपुरुष से भोगों की अभिलाषा रखने से।
(21) पाला पोसा पुत्र मर जावे – दूसरों की धरोहर दबाने से।
(22) पुत्र–पुत्री अविनयी होवे – पिछले भव बिना कारण विरोध करने से।
(23) पुरुष की बार–बार स्त्री मर जावो – साधु होकर स्त्री सेवन करने से, लिया व्रत तोड़ने से।
(24) हमेशा पेट में रोग रहे – खा पीकर झूठा सड़ा भोजन साधु को देने से।
(25) नरक गति में जावे – सात कुव्यसन सेवन करने से।
(26) लंगड़ा होवे – पड़ोसी का धन चुराने से, परायी चाबी लगाकर ताला खोलने से।
(27) नपुंसक होवे – अति क्रूर कपट करने से।
(28) धनवान होवे – दान देने से। (29) रूपवान होवे – तपस्या करने से।
(30) मनोवांछित सुख पावे – बड़ों की विनय करने से।
(31) सिद्ध गति में जावे – दान शील, तप भावना भाने से।

9 खाद्य पदार्थों में जयणा

तन, मन, जीवन को बिगाड़ने वाले अभक्ष्य व अपेय पदार्थों का त्याग करें और स्वस्थ व सुखी बनें। आज का आदमी न खाने की चीज खाता है, न पीने की चीज पीता है, बिना भूख के खाता है, वक्त-बेवक्त खाता है, रात को खाता है (रात्रि भोजन महापाप है) बाजारू अभक्ष्य खाता है। स्वादलोलुपता का परिणाम रोग और अंततः अकाल मृत्यु है।

इन पदार्थों से आरोग्य-तेज-बल-शक्ति और आयुष्य का क्षय होता है। आज हम सब लोग स्वाद के पीछे पड़कर खाने-पीने में गंभीर भूलें कर रहे हैं। खाने-पीने में सतर्क न रहने के कारण सेहत खराब करते हैं। खाना खाने के पहले वह अभक्ष्य, अशुद्ध या आरोग्यनाशक नहीं है, सुनिश्चित कर लें। घर के बाहर बनने वाले हरेक तैयार खाद्य-पेय का त्याग करें, नहीं तो तन-मन-धन-आतम लुट जायेंगे।

(1) तैयार खाखरे में काल मर्यादा जानना व कायम रखना मुश्किल होता है। अतः घर पर बनाये हुए खाखरे का ही उपयोग करने का आग्रह रखें।

(2) कई घरों में मोगरी आदि सब्जी में ऊपर दही डालकर खाने की पद्धति है। दाल इत्यादि रसोई के साथ द्विदल का दोष न हो, उसके लिए दही वापरना हो तो अच्छी तरह गर्म करके ही वापरें।

(3) शादी इत्यादि प्रसंगों पर तथा पार्टियों में एसेंस वाले दूध का शर्बत परोसने की प्रथा काफी व्यापक बनती जा रही है। ऐसे एसेंस खाने लायक नहीं, बल्कि कच्चे दूध में ही यह शर्बत बनाया जाता है, जिससे संपूर्ण मुखशुद्धि बिना भोजन करने से द्विदल का दोष लगने की पूरी सम्भावना है।

(4) मेथी का मसाला, मेथी डाली हुई कढ़ी, मेथी की सब्जी, मेथी के चूरे वाला आचार इत्यादि के साथ कच्चे दूध-दही-छाछ नहीं खाने चाहिए। द्विदल होने से अभक्ष्य बनता है।

(5) आजकल पार्टियों में क्रीम सलाद का प्रचार दिखाई देता है। उसमें प्रयुक्त क्रीम बासी होने से यह खाद्य स्वयं अभक्ष्य है। जबकि यह क्रीम कच्चे दूध का होने से दालों के साथ खाने से द्विदल बन जाता है।

(6) पानीपुरी में पुरी बाहर से तैयार लाकर प्रयोग करते हैं। उसमें कालातीत इत्यादि दोष रहे हैं, जिससे वह अभक्ष्य बनता है।

(7) साबुदाने की उत्पादन प्रक्रिया अत्यंत हिंसक है। अतः साबुदाने के किसी भी खाद्य का उपयोग न करें। एक कंद के रस को सड़ाकर असंख्य जीव कुचले जाने पर साबूदाना बनता है। अनंतकाय व असंख्य त्रस जीवों का नाश होता है। अभक्ष्य होने से प्रयोग न करें।

(8) कच्चे दूध-दही-छाछ या उससे बने खाद्यों के साथ दालों का अंश भी आता हो ऐसे खाद्य न खायें।

(9) पर्व-तिथियों में तथा पर्युषण-ओली-अट्ठाई इत्यादि पर्वों में लीलोतरी (सब्जी, भाजी, फल) का उपयोग न करें।

(10) सभी फल लीलोतरी में गिने जाते हैं।

9 सीधे सवाल उलटे जवाब

(1) एक पक्षी ने 7 अंडे दिए, जिनमें से एक डायनासोर ने खा लिया। अब कितने अंडे बचे?

(2) ऐसा कैसे हो सकता है कि जेब में कुछ है पर फिर भी जेब खाली है?

(3) 1+1 = 2 कब नहीं होगा?

(4) ऐसा कौन-सा ट्री है जो न हो तो पलूशन कम हो जाता है?

जवाब

(1) सारे। डायनासोर अब बचे ही कहा, जो अंडे खाएँगे।

(2) क्योंकि जेब में छेद है। हमेशा बढ़ती ही है, घटती नहीं है।

(3) जब हम गलती करेंगे।

(4) फैक्ट्री।

विद्या प्राप्ति मन्त्र

णमो बम्भीए लिविए।

प्रतिदिन एक माला फेरने से विद्या प्राप्त होती है।

स्मरण-शक्तिवर्धक मन्त्र

ॐ ह्रीं ऐं सरस्वत्यै नमः।

प्रतिदिन एक माला फेरने से स्मरण शक्ति बढ़ती है।

प्रयत्न करते रहना ही मात्रा हमारा कर्त्तव्य है। शेष कुछ भी हमारी चिंता का विषय नहीं होना चाहिए।

MATHS MAGIC

(1) What three positive numbers after addition and multiplication give the same result?

(2) If you multiply me by any other number, the answer will always be the same. What number am I?

(3) How can the number four be half of five?

(4) Can you write down eight eights so that they add up to one thousand?

जवाब

(1) 1, 2 and 3 (Example : 1+2+3 = 6 and 1x2x3 = 6)

(2) 1 and 0. When you multiply 0 or 1 by any other number, the result is always same.

(3) IV, the Roman numberal for four, which is half of the world FIVE.

(4) 888 + 88 + 8 + 8 + 8 = 1,000.

Do You Know About This Tapp

1. ANSHAN TAPP

Anshan Tapp means: To avoid/consume food for only set period of time Eg: Navkarsi, Upvaas, Ayambil etc.

Similarly, to avoid gadgets completely or for a limited period of time is Gadget Anshan Tapp.

2. UNODARI TAPP

Unodari Tapp means: To control our frequent eating habits and to eat less than required.

Similarly, to control our frequent use of mobile or any gadget and to be mindful of the timing and content to ensure moderation is Gadget Unodari Tapp.

ड डसन

डसता है चंड कौशीक, ध्यान में महावीर।
दूध सा खून देखके, चंड धरे मनधीर।।

अरिहंत वर्णमाला 10

भयंकर जंगल के रास्ते पर महायोगी महावीर चले जा रहे थे। ग्वालों व लकड़हारों ने कहा- प्रभु! इस रास्ते से न जाइये। आगे महाभयंकर दृष्टि विष नाग रहता है।प्रभु मौन रहकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़े जा रहे थे। अंत में नाग की बांबी पर जाकर ध्यानस्थ खड़े रहे।

नागराज क्रोधित होकर भगवान के पांव के अंगूठे को डस लिया। डसने पर खून की जगह दूध निकला। यह देख नाग आश्चर्य में डूब गया।

इधर प्रभु ने कहा- बुज्झ चंड! बुज्झ!

क्रोध से ही तुम्हारी यह स्थिति बनी है। पूर्व भव में तुम भी मुनि थे।

यह सुन चंडकौशिक को अपने पूर्वभव की स्मृति हुई तब कृत भूलों पर पश्चाताप करने लगा।

उसने उसी दिन से प्रतिज्ञा ली कि आज से मैं किसी को नहीं सताऊँगा। यह सोच उसने आजीवन अनशन कर लिया।

अनुभव और प्रयोग

कम खाओ	=	ज्यादा जीओ
स्वस्थ तन	=	स्वस्थ मन
संतुलित श्रम	=	मोटापा कम
थकान से मुक्ति	=	अति से बचाव
कम विकल्प	=	मजबूत संकल्प
चिन्ता का बोझ	=	भोग का संयम
कम बोलना	=	ज्यादा समझना
कम चाह	=	सही राह
सीधा मेरूदण्ड	=	ऊर्जा अखण्ड

जिसकी सांसे थम गई थी उस युवक से यमराज ने आधे रास्ते में पूछ लिया। 'दोस्त, तुम्हें कहाँ ले जाना है- स्वर्ग में या नरक में- मैं भूल गया हूँ। अब तुम ही बता दो। तुम्हें कहाँ जाना है।'

'पहले आप मेरा एक काम करो। मेरा मोबाइल मैं नीचे भूल गया हूँ वह मुझे लाकर दो। फिर जहाँ ले जाना है ले जाओ।'

11 चातुर्मास

वर्षावास का अपर नाम चातुर्मासा-वास है। चातुर्मास का अर्थ है-चार माह का समूह। चार मास हैं-श्रावण, भाद्रपद, आश्विन और कार्तिक। कदाचित् पाँच मास होने पर भी उसे रूढ़ि से चातुर्मास ही कहते हैं। वैष्णव परम्परा में दो मास के वर्षावास को भी रूढ़ि से चातुर्मास कहते हैं।

चातुर्मास के चार मास ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप की आराधना के द्योतक हैं; दान, शील, तप और भाव रूप पथ के परिचायक हैं। क्रोध, मान, माया और लोभ रूप चार कषायों पर विजय के बोधक हैं। श्रावक-श्राविकाओं के लिए ये आह्लादक एवं साधु-साध्वियों के लिए प्रमोद-जनक हैं।

धर्माराधन एवं जीवन-निर्माण के लिए चातुर्मास एक सुनहरा अवसर है। वे धन्य हैं जिन्हें चार माह के लिए साधु-साध्वियों का सान्निध्य प्राप्त होता है। इससे अनेकों के मन में धर्माराधन की उमंगें हिलोरें लेती हैं। षट्काय प्रतिपालक साधु-साध्वियों की सन्निधि में समाज के भाई-बहिनों में ज्ञान-ध्यान सीखने की विशेष तत्परता रहती है तथा बालक-बालिकाओं को भी धार्मिक ज्ञान एवं सत्संस्कार प्राप्त करने का पर्याप्त अवसर मिलता है।

नये साधु-साध्वी भी ज्ञानार्जन के लिए इन चार माह को विशेष उपयोगी समझते हैं। चातुर्मास एक प्रकार से समाज में चेतना जागृत करने में अहं भूमिका निभाते हैं।

चातुर्मास समाज में चेतना जागृत करने में अहं भूमिका निभाते हैं। संत-सतियों को स्वयं अपनी साधना के प्रति सजग रहते हुए समाज, परिवार व व्यक्तियों में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का लक्ष्य रखना चाहिए।

चातुर्मास में संत-सतियों की अमृतवाणी एवं सत्संगति का लाभ प्राप्त होता है, जो वास्तव में जीवन को सम्यक् मार्गदर्शन प्रदान करने में सक्षम है।

साधु-साध्वियों को भी चातुर्मास में तभी प्रमोद का अनुभव होता है जब उनके सान्निध्य में अधिकाधिक लोग धर्माराधन करें। प्रायः साधु-साध्वियों का यह चिंतन रहता है कि उनके चातुर्मास में अधिकाधिक तपस्याएँ हों, अधिकाधिक दयाव्रत, पौषध, सामायिक, संवर, एकाशन आदि हों। आजकल

चातुर्मास के चार मास ज्ञन, दर्शन, चारित्रा एवं तप की आरधना के द्योतक हैंऋ दान, शील, तप और भाव रूप पथ के परिचायक हैं। क्रोध, मान, माया और लोभ रूप चार कषायों पर विनय के बोधक हैं। श्रवक-श्रविकाओं के लिए ये आ□ादक एवं साधु-साध्वियों के लिए प्रमोद-जनक हैं।

दीर्घकालीन तपस्याओं पर भी अधिक जोर रहता है। प्रवचन, प्रार्थना आदि में होने वाली उपस्थिति से भी चातुर्मास की सफलता आंकी जाती है। किन्तु कोई भी धार्मिक क्रिया हो, उसमें जन-सुधार एवं व्यक्तिगत-साधना का लक्ष्य प्रमुख होना चाहिए।

भौतिक सुख-सुविधाओं के बढ़ते इस युग में आज भी जैन साधु-साध्वी पद-विहार करते हैं। गर्मी हो या सर्दी, वे चप्पल-जूते भी नहीं पहनते हैं। भूख लगे या प्यास, घरों में जाकर ही प्रासुक आहार-पानी की गवेषणा करके लाते हैं। पास में एक फूटी कौड़ी भी नहीं रखते हैं। पलंग, कूलर, टी.वी., फ्रिज, लाइट, पंखा, वाहन आदि की सुविधाओं से एकदम दूर रहते हैं। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह महाव्रत का पालन करते हैं। आज के युग में यह साधु-चर्या बड़ी कठिन होती जा रही है। फिर भी संयम-साधना में अडिग उनके महान् पुरुषार्थ का द्योतक है। ऐसे त्यागी-मनीषी साधु-साध्वियों के चातुर्मास प्राप्त होने पर यदि हम लाभ नहीं उठाएँ तो यह हमारी भूल एवं कमजोरी है।

चातुर्मास में संत-सतियों की व्यक्तिगत संयम-साधना बाधित न हो, इसका ध्यान श्रावकों को रखना चाहिए, तथा संत-सतियों को स्वयं भी अपनी साधना के प्रति सजग रहते हुए समाज, परिवार एवं व्यक्तियों में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का लक्ष्य रखना चाहिए। स्वकल्याण के साथ जनकल्याण उनके जीवन का अभिन्न अंग होता है।

आज समाज में अनेकविध कुरीतियाँ व्याप्त हैं, परिवार विघटित हो रहे हैं, व्यक्तिगत जीवन तनावग्रस्त है, सन्तों का ध्यान इस ओर भी जाना चाहिए। सामायिक, स्वाध्याय, व्यसनमुक्ति आदि इसके उपायों

भौतिक सुख-सुविधाओं के बढ़ते इस युग में आज भी जैन साधु-साध्वी पद-विहार करते हैं। गर्मी हो या सर्दी, वे चप्पल-जूते भी नहीं पहनते हैं। भूख लगे या प्यास, घरों में जाकर ही प्रासुक आहार-पानी की गवेषणा करके लाते हैं। पास में एक फूटी कौड़ी भी नहीं रखते हैं।

के रूप में सामने आते हैं। सामाजिक बुराइयों के निवारण हेतु सामूहिक निर्णय अपेक्षित हैं, तो व्यक्तिगत एवं पारिवारिक जीवन को सुन्दर बनाने के लिए धर्म की समझ एवं उसका आचरण अपेक्षित है।

चातुर्मास में संत-सतियों की अमृतवाणी एवं सत्संगति का लाभ प्राप्त होता है, जो वास्तव में जीवन को सम्यक् मार्गदर्शन प्रदान करने में सक्षम है। अज्ञान तम को हटाकर वह दिव्य प्रकाश दे सकता है। उस वाणी के अनुरूप आचरण ही धर्म है। धर्म के सम्बन्ध में कहा है-

दीपोहन्ति तमःस्तोमं रसो रोगभरं था।
सुधाबिन्दुर्विषावेगं धर्मः पापहरस्तथा।।

(कुमारपालप्रबोध प्रबन्ध, पृ. 491)

जिस प्रकार दीपक अन्धकार को, रसायन रोग को एवं अमृत की बूँद विष के आवेग को नष्ट कर देती है उसी प्रकार धर्म भी पाप का नाशक है।

आज जो जैन समाज सभी दृष्टियों से अन्य

समाजों की अपेक्षा उन्नत दिखाई देता है, उसके पीछे साधु- साध्वियों के द्वारा समाज में प्रदत्त संस्कारों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। जैन धर्म में तप-त्याग एवं अहिंसा-संयम का महत्व है; उसको दृष्टिगत रखते हुए हमें चातुर्मास में आध्यात्मिक एवं धार्मिक गतिविधियों पर ही अधिक बल देना चाहिए। समाज- सुधार की दृष्टि से युवकों को विशेष रूप से भूमिका निभानी चाहिए।

चातुर्मास में एक अपूर्व उत्साह एवं प्रेम का वातावरण होना चाहिए। युवा, बाल एवं वृद्ध सभी को यथाशक्ति ज्ञान-ध्यान सीखने में समय लगाना चाहिए। महिलाओं को चातुर्मास में अपने ज्ञान एवं संस्कारों का परिष्कार करने में अपना हित समझना चाहिए। आज जिन जैन महिलाओं में अच्छे संस्कार उपलब्ध होते हैं वे प्रायः संत-सतियों के प्रवचन, कथा आदि के रूप में प्राप्त सन्निधि का सुपरिणम है। यदि गृहस्थ एवं गृहिणियाँ चातुर्मासकाल में अपना समय संत-सेवा एवं संघ-सेवा में लगाने के साथ ज्ञानार्जन एवं सामायिक-स्वाध्याय में लगाते हैं तो इससे अपने जीवन का तो निर्माण होता ही है, किन्तु भावी पीढ़ी के लिए भी वे सत्संस्कारों का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

गृहस्थ श्रावकों का यह भी कर्तव्य बनता है कि यदि आवश्यक हो तो वे साधु-साध्वियों के शिक्षण एवं ज्ञानार्जन की व्यवस्था करें तथा उनकी संयम-यात्रा के अनुकूल साधन जुटाएँ। यदि कोई साधु-साध्वी संयम की मर्यादा को तोड़कर स्वेच्छाचरण की ओर कदम रखते हैं तो वरिष्ठ एवं सुज्ञ श्रावकों को उन्हें सावधान भी करना चाहिए। इसलिए एक दृष्टि से श्रावक-श्राविका को साधु-साध्वी के माता-पिता कहा गया है।

संयम का पालन वैसे व्यक्तिगत विचार, मनोबल एवं आत्मबल पर निर्भर करता है, तथापि गण या गच्छ के अधिपति का अंकुश एवं श्रावक-श्राविकाओं की सजगता भी इसमें कारगर सिद्ध होते हैं। जहाँ गच्छ-अधिपति का अंकुश नहीं रह पाता है अथवा श्रावक- श्राविकाओं की जागरूकता नहीं रहती है। वहाँ शिथिलाचार के फैलने की संभावनाएँ अधिक होती हैं। साधु-समाज के प्रति श्रावक-समाज का यह दायित्व बनता है कि वह संयमी-जीवन का आदर-सम्मान करे तथा उसके अनुकूल अपना भी आचरण सुदृढ़ करे। शिथिल श्रावक-श्राविकाएँ ही प्रायः साध्वाचार में पनपने वाले दोषों के निमित्त बनते हैं।

आज जो जैन समाज सभी दृष्टियों से अन्य समाजों की अपेक्षा उन्नत दिखाई देता है, उसके पीछे साधु- साध्वियों के द्वारा समाज में प्रदत्त संस्कारों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। जैन धर्म में तप-त्याग एवं अहिंसा- संयम का महत्व है- उसको दृष्टिगत रखते हुए हमें चातुर्मास में आध्यात्मिक एवं धार्मिक गतिविधियों पर ही अधिक बल देना चाहिए। समाज- सुधार की दृष्टि से युवकों को विशेष रूप से भूमिका निभानी चाहिए।

साधु-साध्वियों के संयमी जीवन के दो फल हैं-(1) आत्म-कल्याण और (2) लोक-कल्याण। आत्म-कल्याण तो वे सदैव एक स्थान पर रह कर भी कर सकते हैं, किन्तु लोक-कल्याण अथवा समाज-कल्याण के लिए वे एक ग्राम से दूसरे ग्राम, एक नगर से दूसरे नगर की ओर पद-यात्रा करते हैं। साधु-साध्वियों के दोनों स्वरूप पूज्य हैं। उनका आत्म कल्याणकारी स्वरूप भी पूज्य है तो लोक कल्याणकारी स्वरूप भी पूज्य है। हम उनके जीवन की इस साधना का महत्व समझें तथा चातुर्मास में व्यर्थ की चर्चा एवं विकथा को छोड़कर सार्थक चर्चा एवं धर्मकथा करें।

आज बहुत से ऐसे युवा हैं जो विभिन्न प्रकार के व्यसनों में फंसे हुए हैं, और धार्मिकों के द्वारा उनकी निरन्तर उपेक्षा की जा रही है। इस उपेक्षित वर्ग को आज धर्म एवं संत-सतियों के सान्निध्य की अधिक आवश्यकता है। उनके मन में हीनभाव भी हैं, अत: वे धर्मस्थलों एवं धार्मिकों से सदैव कन्नी काटते रहते हैं। अत: आवश्यकता है उनके पास पहुँचने की एवं उन्हें संतों की संगति से जोड़ने की। इसके लिए एक-एक परिवार एवं धार्मिक-जन को सजग होना होगा। व्यसनियों को व्यसनों से किस प्रकार विरक्त किया जाय, इस पर चिन्तन अपेक्षित है, क्योंकि आज जैन समाज तपस्या के क्षेत्र में जितना अग्रणी है उतना ही वह अनेक बुराइयों से भी त्रस्त है।

यह देखा जाता है कि धर्म-स्थलों में प्राय: वे ही लोग आया करते हैं जो पहले से धार्मिक हैं, किन्तु समाज में बहुत से ऐसे घर हैं जो कभी धर्म-स्थल की ओर मुख ही नहीं करते हैं। चातुर्मास एक ऐसा निमित्त है, जिसमें वे भी संत-सतियों के सम्पर्क में आ सकते हैं एवं अपने जीवन को नई दिशा दे सकते हैं।

व्यसनों से मुक्ति की ओर समाज का ध्यान अभी केन्द्रित नहीं हुआ है। बारहवीं शती का एक प्रसंग है। आचार्य हेमचन्द्रसूरि ने सप्तव्यसनों के सम्बन्ध में प्रकाश डालते हुए राजा कुमारपाल से कहा-

द्यूतं च मांसं च सुरा च वेश्या,
पापर्द्धिचौर्यं परदारसेवा।
एतानि सप्त व्यसनानि राजन्!
घोरातिघोरं नरकं नयन्ति।।

(कुमारपालप्रबोध प्रबन्ध, 455)

द्यूत, मांस, सुरा, वेश्या, शिकार, चोरी और परस्त्री-सेवन, ये सात व्यसन मनुष्य को घोरातिघोर नरक में ले जाते हैं।

आचार्य ने इन सातों व्यसनों से होने वाली हानि के भी उदाहरण प्रस्तुत किए। राजा कुमारपाल ने ऐसा अभियान चलाया कि राज्य से सातों कुव्यसन गायब हो गए। आज भी गुजरात में मद्य-मांस का सेवन अपेक्षाकृत कम पाया जाता है। ये सातों व्यसन अगले भव की तो कौन कहे, किन्तु इस जीवन में ही नरक का अनुभव करा देते हैं।

इस प्रकार सन्त सदा से समाज का जीवन सुधार करने में सन्नद्ध रहे हैं। यही तत्परता आज भी अपेक्षित है। श्रावकों को चाहिए कि वे ऐसा अभियान चलाएँ कि सम्पूर्ण जैन समाज सप्त व्यसनों से मुक्त हो जाए। सप्त-व्यसनों से मुक्त समाज की देश एवं संसार में कैसी छवि होगी, यह अनुमान का विषय है। जैन समाज आचरण की दृष्टि से एक सुन्दर समाज बन सकता है, जिसका प्रभाव अन्य समाजों पर भी निश्चित ही अच्छा होगा, इसमें संदेह नहीं।

संत समाज के निर्माता होते हैं। उनका अपना एक प्रभाव होता है। जैन समाज में जो लोग आज भी

चातुर्मास-काल श्रावकों के जीवन-निर्माण का काल होता है। धर्म की आराधना के रस का आन्तरिक अनुभव ही उनके वास्तविक जीवन-निर्माण में सहायक है। धर्म का रसायन ही व्यक्ति के क्रोध, मान, माया, लोभ आदि विकारों को दूर करने का साधन होता है।

व्यसनों से बचे हुए हैं, उसमें संत- समागम एवं संत-वाणी का योगदान असंदिग्ध है। आज भी संत-सती इस कार्य में लगे हुए हैं, किन्तु इस ओर जितना सघन अभियान होगा, उतना ही सुन्दर परिणाम आयेगा। यह अवश्य है कि किसी को बलात् व्यसनी से निर्व्यसनी एवं अधार्मिक से धार्मिक नहीं बनाया जा सकता, किन्तु शनैः-शनैः ऐसे लोगों के मनों को जीत कर इस ओर प्रगति की जा सकती है। अच्छा बनना कौन नहीं चाहता? किन्तु इस प्रकार के कार्य धैर्य, लगन, उत्साह एवं दूसरे के स्वाभिमान की रक्षा करते हुए ही सम्पन्न किए जा सकते हैं।

चातुर्मास में बालकों, युवकों एवं महिलाओं के लिए विशेष कार्यक्रम होने के साथ समाज-सुधार के लिए भी कार्यक्रम अपेक्षित है। रात्रि-भोजन त्याग का भी अभियान चलाया जा सकता है।

चातुर्मास का वातावरण तब विषाक्त बनता है जब जिनवाणी का प्रचार कम एवं आडम्बर का अम्बार अधिक होता है। इसलिए एतद्विषयक सावधानी अपेक्षित है।

विचारणीय बिन्दु यह है कि सभी नगरों एवं ग्रामों के श्रावक आर्थिक रूप से एक समान सम्पन्न नहीं होते हैं। यदि कहीं व्यवस्था में किसी प्रकार की न्यूनता रहती है तो उन्हें नीचा देखना पड़ता है। सन् 1974 में आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. ने एक ऐतिहासिक निर्णय लिया था कि वे वहाँ ही चातुर्मास करेंगे जहाँ भोजन-व्यवस्था शुल्क पर आधारित होगी। इस व्यवस्था को उस समय चौका-प्रथा नाम दिया गया। चौका-प्रथा के अनेक लाभ हैं-

1. इससे छोटे ग्राम-नगर भी बड़े साधु-साध्वियों का चातुर्मास कराने में सामर्थ्य का अनुभव करते हैं।

2. छोटे ग्राम एवं बड़े नगरों के श्रावकों में ऊँच-नीच का भाव समाप्त हो जाता है। सभी एक प्लेटफार्म पर आ जाते हैं।

3. अभिलाषी दर्शनार्थी बन्धु अधिक दिनों तक भी निःसंकोच रूप से उस स्थान पर ठहर कर ज्ञान-ध्यान का लाभ ले सकते हैं।

4. साधारण-भोजन के होने से आरम्भ-समारम्भ में कमी आती है।

अब प्रश्न यह होता है कि शुल्काधारित चौका-प्रथा व्यवस्था सभी संघों एवं सम्प्रदायों के द्वारा क्यों नहीं अपनाई गई? इसके अनेक कारण ध्यान में आते हैं, यथा-

1. भोजन-शुल्क की राशि अत्यधिक कम रखना तथा उसे समय-समय पर नहीं बढ़ाना।

2. बहुत से दर्शनार्थी बन्धुओं द्वारा भोजन के कूपन नहीं खरीदना।

3. भोजन-शुल्क से आमदनी नहीं के बराबर होना।

4. दानवीरों का आगे आना।

उपर्युक्त कारणें के अतिरिक्त भी कुछ कारण इस व्यवस्था की असफलता में निमित्त रहे हों, किन्तु अन्ततः यह प्रथा समाज के लिए उपयोगी है।

श्वेताम्बर मूर्ति पूजक समाज के अनेक स्थानों पर मन्दिर हैं। वहाँ पर भोजन के लिए भोजनशालाओं की व्यवस्था रहती है। अनेक भोजनशालाएँ वर्ष भर चलती हैं। दर्शनार्थी को इससे बड़ी सुविधा का अनुभव होता है। इसी प्रकार स्थानकवासी समाज में भोजनशालाओं की व्यवस्था हो, तो दर्शनार्थियों को सहज सुविधा का लाभ मिल सकता है। दूसरी बात यह भी है कि भोजन सात्त्विक एवं सादा हो। गरिष्ठ भोजन का धर्माराधन में अनुकूल प्रभाव नहीं पड़ता है।

चातुर्मास-काल श्रावकों के जीवन-निर्माण का काल होता है। धर्म की आराधना के रस का आन्तरिक अनुभव ही उनके वास्तविक जीवन- निर्माण में सहायक है। धर्म का रसायन ही व्यक्ति के क्रोध, मान, माया, लोभ आदि विकारों को दूर करने का साधन होता है। प्रथमतः तो ये विकार मानव को अपने दोष रूप में दृष्टिगत हों तथा फिर वह उनके निराकरण हेतु प्रयत्नशील हो तो जीवन में धर्म उतरता हुआ अनुभव होगा। विकारों पर नियन्त्रण से व्यक्तिगत जीवन तो तनावरहित एवं सुन्दर बनता ही है, उसका पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन भी सुन्दर बनेगा। यही धर्म की एवं चातुर्मास की सार्थकता भी है। क्रोधादि पर नियन्त्रण करने हेतु प्रतिदिन का अभ्यास भी आवश्यक है, जिसके लिए चातुर्मास एक सुअवसर होता है।

❁

12 Write What'S The Right

प्रत्येक गृहिणी के पास कौन सी कला होनी चाहिए?

A. बचत की **B.** बचाव की **C.** मिलावट की **D.** बदमाशी की

सागर की दिशा में बहने वाली नदी को सागर तक पहुँचने के लिए बीच में कई अवरोधों का सामना करना ही पड़ता है। एवरेस्ट का शिखर सर करने वाले पर्वतारोहक को अनेक मुसीबतों में से गुजरना ही पड़ता है। विद्यार्थी को कठिन परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए अनेक प्रकार की असुविधाओं का और संघर्षों का सामना करना ही पड़ता है। संसार चलाने वाले पति को या पुरुष को कभी न कभी तो आर्थिक कठिनाइयों का शिकार होना ही पड़ता है।

ऐसे कठिन समय में परिवार की प्रसन्नता व मानसिक स्वस्थता टिकाने में वह गृहिणी सफल हो सकती है, जिसके पास बचत की अनोखी कला होती है।

याद रखना, गाड़ी का पांचवां पहिया (स्टेपनी) जैसे मुश्किल घड़ियों में आशीर्वाद रूप बन जाता है वैसे ही, अनावश्यक खर्चों पर रोक लगाकर और आवश्यक खर्चों में भी संयम अपनाकर की गयी बचत मुश्किल समय में वरदानरूप सिद्ध होती है और आशीर्वाद रूप सिद्ध होकर ही रहती है।

■ श्री संजीव जैन, करनाल (हरियाणा)

हरियाणा के एक प्रमुख जिले में रामदेव शैलरों (राइस मिल) में चावल भराई व सिलाई की ठेकेदारी का काम करता था। उस शहर के लगभग 40 शैलरों में से 25-26 शैलरों में वह ही ठेकेदारी का काम करता था। उसके नीचे 250-300 मजदूर हर वक्त काम करते थे। बिहार के समस्तीपुर जिले से आकर अब वह यहीं बस गया था। उसके बच्चे यहीं पैदा हुए और पले-बढ़े थे। बिहार से अगर कोई आदमी उस शहर में आता और उसे कोई काम नहीं मिलता तो वह सीधा रामदेव के पास पहुँच जाता था। रामदेव भी उनसे अपने भाईयों की तरह पेश आता था। वह उनके खाने-पीने व रहने का बंदोबस्त बखूबी कर देता था। वह उन्हें काम दिलाने में भी मदद करता था। अपनी इसी नेक-नियत की वजह से वह बिहारियों में बहुत प्रसिद्ध था। उनके समुदाय का कोई भी आयोजन उसकी उपस्थिति के बिना अधूरा रहता था।

एक तरह से वह अपने बिहारी समुदाय का अनिर्वाचित व अनिर्णीत प्रधान ही था, जिसकी बात काटने की कोई कोशिश तो क्या सोच भी नहीं सकता था। वह भी सबको साथ लेकर चलने में यकीन रखता था। महीने में एक बार वह भंडारा लगाता था, जिसमें वह अपने सभी बिहारी भाइयों व अन्य लोगों को बुला लेता था। अपनी कालोनी में उसने एक मंदिर भी बनवा रखा था। वह चार-पाँच लोगों के साथ मिलकर शाम को गरीब बच्चों को पढ़ाने वाली एक संस्था भी चलाता था, जिसमें तकरीबन सारा खर्चा उसी का होता था।

अपनी संस्था की कक्षा में पढ़ने वाले बच्चों को वह अपने बच्चों की तरह समझता था। वह उनकी छोटी-बड़ी जरूरतों का भी ख्याल रखता था। समय-समय पर वह उनके लिए उपहार भी ले जाता था और उनके लिए कई प्रकार के कार्यक्रम भी आयोजित करता रहता था। कई बार वह उन्हें बाहर घुमाने भी ले जाया करता था ।

रामदेव की शख्सियत के विभिन्न पहलुओं को देखने, जानने और समझने के बाद हम कुल मिलाकर कह सकते हैं कि वह जितना समाज से ले रहा था, उससे ज्यादा समाज को वापिस देने की कोशिश भी कर रहा था।

एक बार उसके शहर में पुस्तकों का मेला लगा। रामदेव ने जब उस पुस्तक मेले के बैनर शहर में लगे देखे तो एकदम उसके दिमाग में विचार आया कि इस मेले में अपनी संस्था की कक्षा के बच्चों को लेकर जाना चाहिए।

एक दिन उसने एक वैन और मिनी बस में 40-50 बच्चों को पुस्तक मेले में ले जाने का कार्यक्रम बनाया। उसने अपनी यह योजना संस्था के अन्य साथियों को बताई तो सभी बहुत खुश हुए।

जिस दिन बच्चों को मेले में लेकर जाना था, उस दिन रामदेव को कुछ काम पड़ गया। उसने अपने साथियों को कहा कि वे बच्चों को लेकर पुस्तक मेले में पहुंचे, वह सीधा वहीं पर आ जाएगा।

सभी बच्चों को निर्धारित समय पर मेले में पहुँचा दिया गया। लेट हो जाने के कारण रामदेव धूल-मिट्टी से सने अपने कपड़ों को हल्का-सा झाड़कर पुस्तक मेले में पहुँच गया। बाहर मेले में जाने वालों की एक लम्बी लाइन लगी हुई थी। वह भी लाइन

में खड़ा होकर अंदर जाने की प्रतीक्षा करने लगा।

तभी रामदेव के पीछे खड़ा एक आदमी, जो शक्ल से यहीं का लगता था, उससे बोला- क्यों रे बिहारी! तू यहाँ लाइन में क्या कर रहा है? तू क्या यहाँ अपना सामान्य ज्ञान बढ़ाने आया है? तुझे पढ़ना आता भी है या नहीं? अगर पढ़ना आता भी होगा तो किताबें पढ़कर कौन-सा कलेक्टर बन जाएगा?

एक बार तो उस अनजान आदमी की ऐसी बेतुकी बातें सुनकर रामदेव को गुस्सा आ गया, मगर वह उसे कुछ नहीं बोला। वह आदमी जिसे उसका साथी काला कहकर पुकार रहा था और भी बहुत कुछ बोलता रहा। रामदेव ने उसकी बातों की ओर कोई खास तवज्जो नहीं दी, वह शीघ्र ही अपनी बारी आने पर मेले में दाखिल हो गया। बच्चों को उनकी पसंद व जरूरत की किताबें दिलवाकर वह उन्हें अपने साथ ही वापिस ले आया। रास्ते में उसने सभी बच्चों को आइसक्रीम भी खिलाई।

बच्चों की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था और रामदेव भी उन्हें खुश देखकर बहुत खुश था।

बात आई-गई हो गई, रामदेव लाइन में खड़े आदमी की बात को तो भूल गया। मगर उस आदमी की छनकती-सी तेज आवाज एक अलग ही तरह की थी। वह रामदेव की यादों में तथा दिमाग के किसी कोष्ठक में जमा हो गई थी।

अंदाजन दो महीने के बाद वह आटा, तेल, दाल व मसाले आदि लेने के लिए किराने की थोक की दुकान पर गया। जिस समय वह सामान ले रहा था, उस समय दुकान पर माल की गाड़ी भी उतर रही थी। रामदेव के कानों में माल उतारने वाले पल्लेदारों के शब्द भी पड़ रहे थे। जो मजदूर दूसरे मजदूरों को गाड़ी में से बोरियाँ उठवा रहा था, वह बोला-ओ काले! तू वहां बैठा अब बीड़ी ही पीता रहेगा या काम भी करेगा।

काला बोला- आ तो रहा हूँ, बीड़ी ही तो पी रहा था। तुम भी यार बोलने को तैयार रहते हो। चल उठवा बोरी।

ये शब्द सुनते ही रामदेव के कान एकदम खड़े हो गए। यह छनकती-सी तेज आवाज उसी आदमी की थी जिसने उस दिन पुस्तक मेले की लाइन में खड़े हुए उसे बहुत कुछ उल्टा सीधा कहा था।

उसने काले को इशारे से अपने पास बुलाया और उसे कहने लगा- क्यों भाई! उस दिन पुस्तक मेले की लाइन में खड़े हुए तुम बहुत बड़ी -बड़ी बातें कर रहे थे कि पुस्तकें पढ़कर क्या कलेक्टर बन जाऊँगा। तुम अपने आपको तो देखो कि तुम क्या करते हो? तुम खुद तो मजदूरी करते हो और बिना मुझे जाने-पहचाने, तुमने उस दिन मुझे लम्बा-चौड़ा भाषण दे दिया था। तुम मुश्किल से मजदूरी करके 10 से 12 हजार रुपये हर महीने कमा पाते होंगे। क्या तुम्हें मालूम है कि तुम जैसे 250-300 आदमी हरदम मेरे नीचे काम करते हैं। मैं हर महीने 3 से 4 लाख रुपये कमाता हूँ। मैं तुम्हें नीचा दिखाने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ। बस तुम्हें समझा रहा हूँ कि बिना जाने-पहचाने किसी को भी हल्के में नहीं लेना चाहिए। उस दिन मैं अपनी संस्था, जो गरीब बच्चों को मुफ्त में पढ़ाती है, की कक्षा के बच्चों को किताबें दिलवाने वहाँ गया था। मैं उन्हें 25000/- रुपये के आस-पास की किताबें दिलवाकर लाया था। तुम्हें बिना जाने मुझे इतना भला-बुरा नहीं कहना चाहिए था। आइन्दा किसी भी आदमी को इस तरह से नीचा मत दिखाना। तुम्हारे गलत बर्ताव व बिना वजह ही किसी की बेइज्जती करने से सामने वाले पर

क्या बीतती होगी, तुम्हें इस बात का थोड़ा-सा भी अंदाजा है या नहीं?

भाई साहब! उस दिन मुझसे गल्ती हो गई। मुझे इस तरह से आपको उल्टा सीधा नहीं कहना चाहिए था। आप मेहरबानी करके मुझे माफ कर दीजिए।

कोई बात नहीं। आइन्दा तुम ध्यान रखना कि जाने-अनजाने में किसी के साथ भी ऐसा व्यवहार मत करना। हाँ, तुम्हें किसी भी समय मेरी जरूरत हो तो मेरा मोबाइल नम्बर नोट कर लो, बेहिचक मुझे याद कर लेना। तुम्हारे किसी भी काम आकर मुझे दिली खुशी होगी।

काला उस आदमी की दरियादिली देखकर हैरान था और वह उसके प्रति आदर, सम्मान व श्रद्धा के भावों में भर गया था।

14 स्वागत गीत

तर्ज : आँखों में हमने आपकी (थोड़ी से बेवफाई)

स्वागत में हम सब आपके पलकें बिछाए हैं।
बस आप, आप-आप ही, दिल में समाए हैं।
बरसों के बाद आप का शुभ आगमन हुआ।
पावन धरा ये हो गई, खुश आज मन हुआ।
मुश्किल से ये खुशी के-2, पल हाथ आए हैं।
स्वागत में हम.....

ठाठ राजसी भी न, तेरा मन डिगा सके।
जलवे विदेश के भी न तुझको लुभा सके।
मुक्ति हो लक्ष्य जिनका-2, वो कब डगमगाए हैं।
स्वागत में हम.....

मुरझाए फूल खिल उठे, उजड़े चमन बसे।
रूठे हुए भी मन गये, रोते हुए हँसे।
लगता है दिन खुशी के-2, फिर से लौट आए हैं।
स्वागत में हम.....

कलयुग में सतयुग आ गया, आने से आपके।
धरती पे स्वर्ग छा गया, आने से आपके।
देवों ने देवियों ने-2, मंगल गीत गाए हैं।
स्वागत में हम.....

15 अगर आप अपने बच्चों को जैनधर्म नहीं सिखाएंगे तो बाहर वाले उन्हें अधर्म सिखाएंगे!

मेरा एक मित्र हैदराबाद की एक पाठशाला में प्रधानाध्यापक हैं। उनका एक जैन दोस्त नीरज जैन एक दिन अचानक भागता हुआ आया और हाथ जोड़कर बोला की उनकी लड़की घर से भागकर एक मुसलमान लड़के से शादी कर ली है, और उसके परिवार के साथ ही रहने लगी है। मास्टर जी, आप ही कुछ कीजिए, हमें इस बर्बादी से बचा लो।

मेरे मित्र उनके एक जानकार मुसलमान व्यक्ति को साथ लेकर लड़की से बात करने लड़के के घर गए, लड़की उस मुसलमान परिवार के घर में थी। लड़की को देखकर मेरा मित्र आश्चर्य चकित रह गया, वह संपूर्णत: मुसलमान लड़की की वेशभूषा में थी।

मित्र ने पूछा- बेटी तुम ने ऐसा क्यों किया? तुम्हारे मां बाप परेशान हैं। लड़की ने कहा कि वह उस मुसलमान लड़के के साथ पिछले एक साल से प्यार कर रही थी। इस दरमियान उस लड़के ने उसे सारे आयत समझाया, सिखाया, अल्लाह की करामात बताई, उसकी मां ने यानी अब उस लड़की की सास ने उसे कुरान सिखाया, घर में सब साथ मिलजुल कर प्रार्थना करने, मिलकर खाने-पीने का रिवाज सिखाया, एक दूसरे के लिए जान तक कुर्बान करने की जज्बा सिखाया।

वह बोली- 23 साल में मेरे माता पिता ने मुझे कभी भी सामायिक, संतदर्शन, तिथि पालन, जीवदया, आगम धर्म ग्रंथों का वांचन, रामायण, मंदिर, स्थानक, भगवान की प्रार्थना, नियमानुसार मंदिर जाना, ऐसी कोई चीज नहीं सिखाई। मैने तो इस लड़के के साथ आने के बाद ही अल्लाह की सच्ची इबादत, उसकी रहमत पाना सीखा। पापा को तो बस पैसे कमाने से फुरसत ही नहीं थी, उन्हें पूजा, सामायिक आदि करते मैंने कभी देखा नहीं। मां अपने साड़ी ब्लाउज के मैचिंग, टेलर के चक्कर काटने, मेकअप वगैरह में ही खुद भी और मुझे भी व्यस्त रखती थी। पिताजी और मां घर में अक्सर झगड़ते रहते थे, खासकर जब दादा -दादी आते तो मां घर में युद्ध छेड़ देती। मिलजुल कर सम्मान से एक परिवार की तरह कभी शांति पूर्वक खुशी-खुशी रहते देखा ही नहीं। कभी ऐसे अच्छे अनुभव नहीं किए। लेकिन अब यहां मुझे वह सब मिला और इसीलिए इनके यहां आने से मैं खुश हूं। अब बताइए, क्या मैं गलत हूं?

लड़की की बातें सब सही थी। यह सब सुनकर मित्र कुछ नही कह सका और वापस लौट आया। नीरज से बस यह कहां की जैसे बोएंगे, वैसे ही पाएंगे।

अफसोस की बात यह है की 80% जैन परिवार में अब धर्म की शिक्षा नहीं होती हैं। माता पिता कपड़ों के सेलेक्शन, मैचिंग नहीं, अपने बच्चों को संस्कृति, आचार-व्यवहार, रीति-रिवाज, शिष्टाचार बचपन से ही सिखाएं। आप बच्चों के आदर्श बनें। धर्मो रक्षति रक्षित:। धर्म उनकी रक्षा करता हैं जो धर्म की रक्षा-पालन करते हैं।

मित्रों! सचेत रहिए। अगर आप अपने बच्चों को धर्म नहीं सिखाएंगे तो बाहर वाले उन्हें अधर्म सिखाएंगे।

फिकर सभी को खा गई, फिकर जगत की पीर
जो फिकर को खा गया, उयका नाम फकीर

16 एक गुमराह युवक के उत्थान-पतन की आश्चर्यजनक कहानी

गतांक से आगे...

जब सद्गुरु करेमि भंते का सूत्र प्रदान करते हैं, तब साधक समभाव की दुनिया में प्रवेश करता है।

आज तक कभी न दिखने वाली स्वस्थता और प्रसन्नता, आनंद और मस्ती, प्रशांतता और पवित्रता, शांति और सौम्यता उसके चेहरे पर देखने को मिली।

उन्हें प्रतीति हो गई कि इन पुण्यपुरुष और इस पवित्र वातावरण के कारण ही सिद्ध के जीवन में यह चमत्कारिक परिवर्तन हुआ है।

वे मन-ही-मन हर्षविभोर तो हो गये परन्तु सिद्ध को मुनि बनने की अनुमति तो वे कैसे देते?

उन्होंने सिद्ध को समझाया, "बेटा! थोड़े समय के लिए इस वातावरण में और इन मुनि भगवंतों के सत्संग में रहना अलग बात है, परन्तु सदा के लिए साधुवेष ग्रहण कर तुम इनके साथ रहने चले जाओ, यह कैसे चलेगा?"

"पिताजी! इसमें एतराज क्या है?"

"एतराज? बेटा, हमारे पास करोड़ों की संपत्ति है, उसका उपभोग कौन करेगा?"

"पिताजी! सच कहूँ तो अब मुझे उसमें कोई रुचि नहीं है। संपत्ति चाहे करोड़ों की हो या अरबों की, उसके दो ही परिणाम होते हैं--बाहर से अभिमानी बने रहो और अंदर से खाली होते रहो।

यहाँ विराजित मुनि भगवंतों के पास एक फूटी कौड़ी भी नहीं है तथापि इन सबके चेहरे तो देखिए! चक्रवर्ती भी इन जैसे प्रसन्न नहीं होंगे। यदि संपत्ति के बिना भी ऐसी श्रेष्ठ प्रसन्नता का स्वामी बना जा सकता हो, ऐसी श्रेष्ठ प्रसन्नता के स्वामी बन सकें, ऐसा जीवन उपलब्ध हो सकता हो, तो फिर ऐसे जीवन का स्वामी क्यों न बना जाये?

क्या कहूँ आपको? संपत्ति हासिल करने की चिंता और प्राप्त संपत्ति को सम्हालकर रखने का भय, ये दो घटक ऐसे हैं जो संपत्ति की प्राप्ति तथा संपत्ति के संग्रह के आनन्द को समाप्त कर देते हैं। मृत्यु के बाद साथ में न आने वाला तथा मृत्यु के न आने तक ही प्रसन्नता देने की गारंटी न देने वाली संपत्ति के पीछे मैं अपने जीवन के अति मूल्यवान क्षणों को बर्बाद नहीं करना चाहता। अतः आप मुझे करोड़ों की संपत्ति का वास्ता देकर यह जीवन अपनाने से रोकिएगा मत।"

सिद्ध की यह बात सुनकर पिता शुभंकर तो स्तब्ध रह गये।

पाई-पाई के लिए जिस जगत में भाई-भाई झगड़ रहे हैं उस जगत में हाथ आई करोड़ों की संपत्ति को ठुकराने के लिए तैयार हो चुके सिद्ध के मन को समझने की कोशिश वे करने लगे।

"जिसके केन्द्र-स्थान में संपत्ति ही थी ऐसे जुए के व्यसन में फँसा हुआ कल का सिद्ध, आज उस जीवन में प्रवेश पाने के लिए इतना उत्साहित है जिस जीवन में संपत्ति का कभी स्पर्श भी नहीं होने वाला?

समस्त सुविधाओं एवं भोग-विलास के साधन उपलब्ध करा दे, उतनी विपुल संपत्ति का एकमात्र उत्तराधिकारी होते हुए आज वह उस विपुल संपत्ति के प्रति इतना विरक्त बन गया है?

क्या सत्संग इतना प्रभावशाली हो सकता है?

क्या संत का परिचय जुआरी के जीवन पर भी अपना ऐसा प्रभाव डाल सकता है?..."

वे आगे सोच न सके।

"परन्तु बेटा! तुम्हें हमेशा के लिए इस मार्ग पर जाने की अनुमति देने से पहले मुझे तुम्हारी माता की इच्छा तो जाननी पड़ेगी ना?"

"पिताजी! आप ही कल्पना कीजिए। कल रात मैं घर में प्रवेश पाने के लिए ही आया था, दरवाजा खोलने के लिए मैंने माँ से याचना भरे स्वर में विनती भी की थी, पर फिर भी माता ने दरवाजा तो न खोला बल्कि उल्टा मुझे सुना दिया कि "जिस जगह के दरवाजे खुले हों वहाँ चले जाओ।"

इसका अर्थ क्या है? मेरी माता यदि चाहती होती कि मैं घर में रहूँ तो अपने इकलौते पुत्र को, आधी रात को, उसकी प्रार्थना सुनने के बाद भी ऐसा वह कह सकती भला? सच तो यह है कि माता वही चाहती थी जो करने के लिए मैं अभी तत्पर तथा तैयार हो गया हूँ।

और एक बात तो आप भी समझ सकते हैं कि जुए के व्यसन में लिप्त होने के कारण जो पुत्र अधिकतर घर से बाहर ही भटकता हो, उस पुत्र की माता व्यसनी संतान से वैसे ही परेशान होती है। वह चाहती है कि या तो उसकी संतान व्यसनमुक्त हो जाये या फिर नजरों से दूर हो जाये। और... मैं माता की दोनों इच्छाएँ पूर्ण करने के लिए अब तत्पर हो गया हूँ।

मैं केवल व्यसनमुक्त ही नहीं बनना चाहता, पापमुक्त भी बनना चाहता हूँ और उसके लिए संयमजीवन अंगीकार करना चाहता हूँ।

अब रही बात धन्या की। हो सकता है कि वह मेरे इस कदम से सहमत न हो, परन्तु जुए के व्यसन में लिप्त होकर कई-कई रातें मैंने उससे दूर रहकर गुजारी हैं। उसे अपनी पहचान एक जुआरी की पत्नी के रूप में देनी पड़े इससे अच्छा तो यह है कि वह अपनी पहचान एक मुनि की पत्नी के रूप में दे।

संक्षिप्त में, पिताजी! एक प्रवीण जुआरी जब मुनि बनकर पवित्र जीवन जीने के लिए तैयार हो गया है तब आपको उसे आशीर्वाद देने के साथ अपनी रजामंदी भी दे देनी चाहिए। क्योंकि आपकी अनुमति के बिना गुरु महाराज मुझे इस पावन और नूतन जीवन को प्रदान नहीं करेंगे।

एक ओर सिद्ध का शांत-प्रशांत नया स्वरूप तथा दूसरी ओर उसकी सात्त्विकता भरी दलीलें। इन दोनों हकीकतों ने शुभंकर के हृदय को पिघला दिया। उन्होंने गुरु भगवंत को सिद्ध को संयम जीवन प्रदान करने की प्रार्थना की। यह सुनते ही सिद्ध हर्षविभोर हो नाचने लगा।

"मुझे जैसे जुआरी को मुनि जीवन मिल जायेगा? आवारा सिद्ध गिनती की पलों में मुनि बन जायेगा? जुआरी के मैले-कुचैले वस्त्रों में भटकने वाले सिद्ध की देह पर पवित्रता की अलख जगाने वाले श्वेत वस्त्र शोभायमान हो उठेंगे? जीवन-भर पाप क्रियाओं में ही व्यस्त रहा सिद्ध आज से धर्मक्रियाओं में तल्लीन हो जायेगा!"

उसकी आँखों से हर्ष के आँसू टपकने लगे। संयमजीवन की अनुमति देने वाले पिता के चरणों में वह आभारवश झुक गया।

और जब आचार्य भगवंत ने सिद्ध को अत्यन्त प्रसन्नता के साथ सर्व जीवों को अभयदान देने की क्षमता रखने वाला रजोहरण प्रदान किया तब षटखंड का साम्राज्य पाने वाले चक्रवर्ती के मुख पर दिखाई देने वाली चमक से कई गुना ज्यादा चमक सिद्ध के मुँह पर

प्रकट हो गई।

जुआरी सिद्ध मुनिवर सिद्ध बन गया।

कषायाविष्ट सिद्ध उपशांत बन गया।

आवारा सिद्ध स्थिरमना सिद्धर्षि बन गया।

सगे पिता के सामने भी न देखने वाला सिद्ध मुनियों के चरणों में ध्यानस्थ सिद्धर्षि बन गया। ऐसा लगा कि मानो अमावस्या पूर्णिमा बन गई! कचरे का ढेर एकाएक उपवन में परिवर्तित हो गया! ❁

"अब तो जरा रुको,
तृष्णापंथ में कब तक भटकोगे?
चरण, अब तो जरा रुको।
इच्छाओं के वन घने, भ्रामक इनके रास्ते,
इधर-उधर भटकते रहते
बिन ध्येय के यूँ ही,
अब सूरज अस्त होगा,
कब वन से बाहर निकलोगे?
चरण, अब तो जरा रुको...
फल-फूलों के वन के पंछी
पिंजरे में पकड़ाते,
मोह-माया में इंसान इसी तरह जकड़ाते,
बंधन में रहोगे यूँ ही तो
कब मुक्त होकर घूमोगे?
चरण अब तो जरा रुको..."

कवि मेघबिंदु की इन पंक्तियों का संदेश स्पष्ट है- तृष्णा असीम है, जीवन सीमित है।

आशा अनंत है, पुण्य सीमित है।

जो नाशवंत है, वही दिखता है।

जो अविनाशी है, वह अदृश्य है।

प्राप्त इस दुर्लभ मानव जीवन के क्षणों को इच्छापूर्ति, आशापूर्ति अथवा मनोरथपूर्ति में बर्बाद करते रहोगे तो एक दिन ऐसा आयेगा कि जब तुम्हारी आँखें बंद हो जायेंगी पर उस समय भी बिन पैंदे का तुम्हारी इच्छाओं का घड़ा खाली का खाली ही होगा। तुम्हारा शरीर राख में परिवर्तित हो गया होगा और तुम्हारा आत्माराम नये शरीर में कैद होकर नये भिक्षापात्र में नये पदार्थों की भीख माँग रहा होगा। इसलिए सावधान! अभी जहाँ हो वहीं थम जाओ, और उसके बाद धीरे-धीरे गलत राह से वापस मुड़ते जाओ।

जुआरी से मुनि बने सिद्धर्षि के पास यह समझ बिल्कुल स्पष्ट थी। मुनिजीवन की कठोर- चर्याओं के पालन में उन्हें किसी तकलीफ का अनुभव नहीं होता था, बल्कि आनंद आता था।

(क्रमशः)

श्रोता के गुण

(i) भक्तिवान होवे, (ii) मीठा बोलने वाला, (iii) गर्वरहित होना, (iv) सुनने में रुचि वाला होना, (v) एकाग्रचित्त होना, (vi) प्रश्नों को जानने वाला होना, (vii) शास्त्रों का रहस्य जानने वाला, (viii) धर्म में आलस्य व निन्दा न करने वाला, (ix) बुद्धिमान होवे, (x) दातार गुण होवे, (xi) वाद-विवाद रहित होवे।

17 जमनापार में क्रांतिकारी धूम

संघशास्ता पूज्य गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. के परम सुशिष्य आगमज्ञाता योगीराज पुज्य गुरुदेव श्री अरुणचंद्र जी म. गुरु हनुमंत श्री अमन मुनि जी म. आदि ठाणे का क्रांतिकारी विचरण जमनापार की धरा पर हो रहा है। यत्र-तत्र-सर्वत्र ही श्रद्धाओं का सैलाब उमड़-उमड़कर स्वागत में जुट रहा है। बच्चे-बच्चे की जुबां पर जय सुदर्शन - जय अरुण की धुन गुंजायमान हो रही है।

गुरुदेव ने जब जाना की जमनापार की कुछ श्रद्धाएँ सुस्त हैं तो गुरुदेव ने लक्ष्य बना लिया कि हर स्थानक तक पहुँच बनानी है। गुरुदेव के इस लक्ष्य को भयंकर गर्मी भी ना रोक सकी। लघुकाय स्थानकों की प्रतिकूलता भी हौसलों को कमजोर ना कर सकी।

गुरुदेव जमनापार पर खूब बरसे। मानसून बनकर बरसे। इतना बरसे कि दिलों की तपिश छू-मंतर होने लगी और जिनवाणी का रसपान करने हेतु सैकड़ों की तादाद में श्रोता उमड़ने लगे।

जमनापार में हुए विचरण के दौरान 20 स्थानकों में ऐसी कोई स्थानक ना रही जो छोटी ना पड़ी हो। हर स्थान पर हाउसफुल को देखकर जनता तो जयकारों का नाद करती, लेकिन गुरुदेव तो सामान्य सहज रूप में होते और फरमाते कि यह सब मेरे गुरुदेवों की कृपा है, मेरे गुरु भ्राताओं की कृपा है।

गुरुदेव ने अपने सैद्धांतिक और मनोहर प्रवचनों के माध्यम से कमजोर पड़ती श्रद्धाओं को बल दिया। स्थानकवासी परंपरा की निराकार उपासना की महत्ता को समझाया।

गुरुदेव का प्रयास हर घर, हर व्यक्ति तक पहुँचने का रहा। 59 वर्ष की आयु में इनकी स्फूर्ति युवाओं को मात करती है। तभी तो छोटी-बड़ी हर ऐसी स्थानक, जहां विचरण नहींवत् होता है, वहां पर भी इनकी करामात ने रंग दिखाया। हर किसी को नियम पच्चक्खाण से बांधना, मुखवस्त्रिका और सामायिक से जोड़ना। गुरूदेव के पुरुषार्थ का यह रूप हर किसी को इनसे ही जोड़ देता है।

इसी बीच गुरूदेव ज्वरग्रस्त भी हुए, लेकिन इन्होंने उसे भी सामान्य समझा और शीघ्र ही पूर्ण स्वस्थ होकर पिच पर लौट आये।

फिलहाल गुरूदेव का सूर्यनगर विराजना हो रहा है। प्रवचन धारा नित्य प्रति बह रही है।

वाचस्पति गुरूदेव का 61वां पुण्य-स्मृति दिवस उनकी ही परंपरा के महान क्षेत्र सूर्यनगर में मनाया गया। प्रारंभ में श्री अमन मुनि जी म. ने उनके जीवन की घटनाओं को रोचकता से पेश किया। फिर उनके चहेते गुरूभक्तों ने गुरू गुणगान का समां बांधा। अंत में गुरूदेव ने फरमाया- महापुरूषों का जीवन प्रतिकूलताओं की अग्नि में पक कर निखरता है। वाचस्पति गुरूदेव इतना निखरे कि वे पंजाब परंपरा की आवाज बने। हमारी परंपरा संयमी परंपरा के रूप में जानी जाती है। यह सब उनकी कृपा है।

युवा मनीषी श्री मनीष मुनि जी म., श्री अभिनन्दन मुनि जी म. ठाणे 2 हरियाणा की धरती पर धर्मलाभ बरसाते हुए मतलौड़ा मंडी में विराजमान हैं। आप यथावसर दर्शन प्रवचन का लाभ लें।

... कपिल जैन, सूर्यानगर

युवाध्यक्ष जमनापार

पूज्य गुरुदेव श्री अरुणचन्द्र जी म. आदि सन्तवृन्द के चातुर्मासिक प्रवेश पर गुंजायमान हुए गुरुदेवों के जयकारे

आगमज्ञाता योगिराज पूज्य गुरुदेव श्री अरुणचंद्र जी म. एव गुरु हुनुमंत श्री अमन मुनि जी म. आदि ठाणे 5 का विवेक विहार चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश 30 जून को सानंद संपन्न हुआ। जमनापार वासियों के लिए यह दिन अविस्मरणीय हो गया।

प्रातः 7:00 बजे पूज्य गुरुदेव ने अपनी शिष्य संपदा के साथ प्रस्थान किया। इससे पूर्व सायंकाल से ही मॉनसून के घने बादल उमड़ - उमड़ कर अनुमोदना का इजहार कर रहे थे। जोकि स्थानीय समाजों को आशंकित भी कर रहे थे।
लेकिन वर्षो से इतिहास गवाह है - प्रकृति शायद ही कभी गुरुदेव के खास अवसरों पर अड़चन बनी हो।

इस दिन सूर्यानगर श्रीसंघ का उत्साह साँतवें आसमान पर था। जय सुदर्शन - जय अरुण इन पूज्य महापुरुषों के पवित्र नामों से सजे एकसमान परिधान में संपूर्ण कार्यकारिणी एवं गुरु भक्त तैनात थे।

गंतव्य स्थल से ही गतिमान गुरु भक्तों का विशाल काफिला विशालतर होता गया विवेक विहार पहुँचते पहुँचते तो यह काफिला विशालतम रूप में आ गया। मार्ग में गुरु भक्तों का जोश गगनभेदी जयकारों के माध्यम से इस रूप में प्रकट हुआ। करीब 90 मिन्ट तक लगातार धरती आसमान गुंजते रहे ।

आवाज सुनते ही चलने वालों के कदम, प्रवेश-यात्रा को देखने के लिए थम रहे थे।

समूचे जमनापार का जैन समाज गुरुदेव के स्वागत में सड़क पर उतर गया था ।

फिर प्रवेश - यात्रा लायंस क्लब के प्रांगण में धर्म सभा के रूप में परिवर्तित हो गई। इस दिन उत्तर भारत के वरिष्ठ श्री संघ एंव गणमान्य श्रावक भी उपस्थित रहे। जिसमें श्री जयकुमार जैन 'खिड़वाली' ने पीतमपुरा गत चातुर्मास का ब्यौरा देते हुए कहा जमनापार का यह चातुर्मास हमारे यहाँ से भी अव्वल रहेगा। क्योंकि गुरुदेव का व्यक्तित्त्व ही इतना विशाल है। श्री नरेश जैन 'सोनीपत' ने कहा- ये वो महान गुरुदेव है जो सर्वत्र ही स्थानकवासी परंपरा को संबल देते हैं। श्रावक श्री जे.डी. जैन 'गाजियाबाद' ने कहा- गुरुदेव! अब वो समय आगया है कि आप आचार्य पद की शोभा को गौरवान्वित करो।

अन्य श्रावक एवं श्राविकाओं ने भाषण एवं भजनों से स्वागत के लम्हों को यादगार बनाया।

विवेक विहार श्रीसंघ को गुरु परंपरा का पहला चातुर्मास मिल रहा है। अतः उनका उत्साह एक तरफा विजित रहा। कहा- गुरुदेव आपके इस उपकार से इस धरती की माटी सदैव सनाथ रहेगी।

अंत में गुरुदेव ने कृपा की - स्वं को स्वं से जोड़ने का अनुपम अवसर है चातुर्मास।

गुरु सुदर्शन के नाम की फर्म ही ऐसी है हर जगह इस नाम के दीवाने हैं। गुरु सुदर्शन के दीवाने कभी कट्टरता को पसंद नहीं करते हैं। इस मौके गुरुवर आचार्य पद की ऑफर पर भी बोले- आचार्य बनने के लिए तो पहाड़ जैसे गुण चाहिए।

विवेक विहार एवं सूर्यनगर संघ की व्यवस्थाओं ने सबका दिल जीत लिया।

Vinay Jain
+91-9876113355

Parbhas Jain
+91-9888105905

KRIGLOW

A new age lighting brand aiming to Create the right emotion, high Quality of Space and improve the quality of enviroment through illumination.

- LED Lighting fixtures
- Custom Lighting
- Lighting solution from International renowned brands

OUR INTERNATIONAL COLLABORATIONS :-

WEVER & DUCRÉ LIGHTING · XAL · wästberg

Plot no 263 Phase 2 Industrial Area Panchkula Haryana
+91-9855253355, +91-9855243355, +91-9888105905

Let's get social:

卐 श्री महावीराय नमः 卐

!! श्रीमत् सुदर्शन गुरवे नमः !! !! श्री अरुणचन्द्र गुरवे नमः !! !! तपस्वी श्री बद्रीप्रसादाय नमः !!

स्व. श्री प्रीतम लाल जैन (सिंघाणा वाले)

Anand Jain
8708625227

DEV RACHNA TEXTILES

Anuj Jain
9315370094

MFG OF: Fancy Dress Meterials

Surat Office: A.319, 3rd Floor, Landmark Empire, Saroli Road, Surat (Guj)

Anand Jain
8708625227

GSP FABRICS

Anil Jain
9827507805

Office: 2187/2, Ganesh Market, Chira Khanna, Nai Sarak, Chandni Chowk, Delhi-6

Krishan Jain

Punit Jain

Akhil Jain

मै. मांगेराम कृष्ण कुमार जैन

कमीशन एजेन्ट

दुकान नं. ३०, नई अनाज मण्डी, गन्नौर, जिला सोनीपत

Shreyans Automotives

Saharanpur Road, Mohabbewala, Dehra Dun (Uttarakhand)
E-mail : shrayansauto@gmail.com

Suresh Jain
9311684496

Arihant Jain
9313208594

Sachin Jain
9971954325

PARAS ESTATE

Builder Collaborator & Financial Advisor

B-6/86, Sector-7, Shiva Road, Rohini, Delhi-110085
Branch Office : A-1/358, Sector - 36, Rohini, Delhi

श्री महावीराय नमः

श्री सुदर्शन गुरुवे नमः श्री अरुण गुरुवे नमः

delhi's in style

by arunima fashions

• Designer Sarees • Lahenga Chunni
• Dresses • Suits • Gowns • Crop Tops
• Indo Westerns

Arunima Fashions

A Group Of Giri Lal Prem Chand Sarees Pvt. Ltd.

Gali Jutte Wali, 1st Floor, Nai Sarak, Chandni Chowk, Delhi - 110006

+91-11-43831651

+91-9818082520 || +91-9871631417

delhisinstyle delhiinstyles

!!श्री महावीराय नमः!!

!!श्री सुदर्शन गुरवे नमः!! !!श्री अरुणचन्द्र गुरवे नमः!!

NVR® PRODUCT

Make it's own way.......

जीओ और जीने दो

RAJESH JAIN
(लोहे वाले)
98140-61899

NAVNEET JAIN 9814644141

VINEET JAIN 9876561899

N.V.R. FORGINGS

AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY

Mfrs. of HAND TOOLS

10, Waryana Industrial Complex,
Leather Complex Road, Jalandhar

Ph : 91-181-2650958, 98761-57400 Fax : 91-181-2650873

e-mail : nvrforgings10@yahoo.in I web : nvrforgings.com

N.V.R. OVERSEAS

45-A, Kapurthala Road, Near Patel Chowk, Jalandhar City
Ph : 2621066, 2621067 E-mail : nvroverseas@rediffmail.com

श्री सुदर्शन गुरवे नमः !! श्री महावीराय नमः !! श्री अरुणचन्द्र गुरवे नमः

Mukesh Jain
(Moth)

Vikash Jain
(Khidwali)

Ujjwal Jain
(Moth)

MITTAL FABRICS

(Surat, Delhi, Rohtak)

Specialist in :
Unstitch Ladies Suit & Fancy Dress Material

Office Add. - 2784/47, 1st Floor, Ganesh Mkt.,
Cheera Khana, Nai Sadak, Delhi - 110006

9312661883. 9311161883
011-49060370

A Unit Of Mittal Print, Surat

Vikash jain
9213125553

Deepak jain
9899165164

GSP®
INFINITE FASHION

JAIN UDAY TEXTILES

Mfd. By

Legging, Plazo, Pant, Petticoat, Kurti

IX/1208 B, Near Gali No. 0, Multani Mohalla, Subhash Road, Gandhi Nagar, Delhi-31

!! श्री रोशन गुरवे नमः !! !! श्री महावीराय नमः !! !! श्री धर्म गुरवे नमः !!

Fair Choice
Shirts

NGR Shirts

NAVKAR FASHION

IX/6728, JANTA GALI, GANDHI NAGAR, DELHI-31

Sandeep jain
8800171017

Pankaj jain
8527526336

आगमज्ञाता पूज्य गुरुदेव श्री अरुणचन्द्र जी म.
आदि सन्तवृन्द के चातुर्मासिक प्रवेश की झलकियां

RNI No. DELBIL/2017/71825 DL No. DL(N)/365/2023-25 POSTING DATE 10-11

भव्यातिभव्य प्रवेश की अन्य झलकियां

स्वामी-मुद्रक एवं प्रकाशक दिनेश जैन द्वारा पारस ऑफसेट प्रा. लि. कुण्डली इंडस्ट्रियल एरीआ, कुण्डली (हरियाणा) से मुद्रित एवं 424, चौथी मंजिल, डी-मॉल, ट्विन डिस्ट्रिक सैक्टर-10, रोहिणी, दिल्ली-110085 से प्रकाशित।